Vol. 2 2016
ISSN 2454 - 4310

अपराजिता शोध पत्रिका

An Annual Multidisciplinary Research Journal

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की
(स्थापित - 1966)

NAAC Accredited - B

ज्ञान ही है नित नूतन, चेतन
ज्ञान ही है शक्ति और आनंद
ज्ञान ही है शाश्वत, चिरंतन
और प्रकाशवान !

ISSN 2454-[illegible]

अपराजिता

शोध पत्रिका

An Annual Multidisciplinary Research Journal

Vol. 2 [illegible]

[illegible]	–	श्री [illegible] [illegible] [illegible]
प्रधान सम्पादक	–	डॉ० [illegible] मिश्रा
सह सम्पादक	–	डॉ० अनुपमा गर्ग
सहायक सम्पादक	–	डॉ० [illegible] बाला डॉ० [illegible]
आवरण पृष्ठ	–	डॉ० [illegible]

परामर्शदात्री समिति

- प्रो० [illegible]
  [illegible]
  [illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]
- प्रो० [illegible]
  [illegible]
  [illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]
- प्रो० [illegible]
  [illegible]
  [illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]
- प्रो० [illegible]
  [illegible] हिन्दी विभाग, [illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]
  [illegible]
- प्रो० [illegible]
  [illegible]
  [illegible] विश्वविद्यालय, दिल्ली

अनुक्रम

	पृष्ठ संख्या
1. [illegible] डॉ० [illegible]	1
2. [illegible] डॉ० [illegible]	3
3. [illegible] प्रो० [illegible]	10
4. [illegible] डॉ० [illegible]	14
5. [illegible] डॉ० [illegible]	19
6. [illegible] डॉ० [illegible]	23
7. [illegible] डॉ० [illegible]	26
8. [illegible] डॉ० [illegible]	29
9. [illegible] डॉ० [illegible]	39
10. [illegible] डॉ० [illegible]	42
11. [illegible] डॉ० [illegible]	48
12. [illegible] डॉ० [illegible]	51
13. [illegible] डॉ० [illegible]	56
14. [illegible] डॉ० [illegible]	58
15. [illegible] कु० [illegible]	61
16. Representation of the Subaltern Migrant in Indian Fiction Prof. [illegible]	[illegible]
17. Education : Footprints for Destiny Dr. [illegible]	72
18. Twelve Olympians Dr. Anupama Garg	75
19. Relevance of Vedic Aachar Darshan Dr. [illegible] Sharma	78
20. Continuous and Comprehensive Evaluation & It's Implementation In Indian Education on Different Levels Dr. [illegible] Kumar	84
21. Effects of Culture on Food Choices Dr. [illegible]	[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

स्थापित 1966

[illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]

NAAC Accredited - B

[illegible]

2nd Edition Jan. - Dec. 2016

Published by -
S.S.D.P.C. Girls (PG) College Roorkee
Roorkee - 247667 (Uttarakhand)
Tel : 01332-2627[illegible]
E-mail : ssdcpgroo@gmail.com

Printed at -
Jain Offset Press, Roorkee
M : [illegible]

President's Message

It's a matter of great honour & pride for me to write these few lines for the 2nd issue of Aparajita Shodh Patrika, a multidisciplinary research journal of our prestigious institution.

Education is a powerful tool. Holistic development of a society or nation is only possible with educated human beings. Higher education to be meaningful in addition to impart knowledge should also inculcate emotional maturity and sensitivity to equip individuals with essential value system. Also in order to achieve growth in real terms implies continuously exploring and developing new frontiers of knowledge in different walks of life.

I deeply believe that the former goal has quite successfully been achieved by our institution during its 50 year long golden tradition of imparting value based quality education. Now the publication of a research journal of its own will definitely go a long way in providing its academic endeavours a wider perspective.

As I know, it was a long cherished dream of college faculty to make a positive and meaningful contribution in the field of education and research. Success automatically follows when thoughts convert into action. I know for sure, every person associated with it is driven by a positive energy and burning desire to make this dream a vibrant reality. Positivity, motivation and commitment of the editorial team with the oxygen of enthusiasm and dedicated hard work will surely make this new venture a success and take it to the newer heights of excellence.

I appreciate the efforts of editorial board and wish the members all success in their future endeavours.

Ajay Garg
President

सम्पादक की कलम से....

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्चना मिश्रा

भारत का मुकुटमणि हिमालय

प्रो० महावीर अग्रवाल*

[illegible] हिमालय [illegible]

हिमालय के सौन्दर्य और इसकी विराटता, भव्यता को देखकर कविकुलगुरु कालिदास की [illegible] कहा-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

([illegible])

कुमार सम्भव के प्रथम [illegible] कालिदास ने [illegible] हिमालय का जो [illegible] वर्णन किया है [illegible]

हिमालय केवल एक पर्वत नहीं है अपितु भारतीय संस्कृति [illegible] आदर्श, जीवन दर्शन और [illegible] इतिहास का [illegible] केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री और हेमकुण्ड साहिब [illegible] जून, 2013 की [illegible] **प्रकृति का अनियंत्रित दोहन, [illegible] हिमालय योग की भूमि है न कि भोग भूमि।** यह आध्यात्मिक साधना का पवित्रतम क्षेत्र है, न कि भौतिकता, विलासिता या [illegible] का उन्मुक्त क्षेत्र। [illegible]

*पूर्व कुलपति, [illegible] संस्कृत विश्वविद्यालय, [illegible]

छायावाद और महादेवी वर्मा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]
[illegible]
[illegible]
उच्छ्वसित पुलकित हो [illegible]"।

[illegible]

"मधुर-मधुर मेरे दीपक जल...,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।
सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन,
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल"।

[illegible]

"[illegible] की [illegible]
[illegible] निर्जन [illegible]"।

[illegible]

"मैंने कब देखी मधुशाला?
कब माँगा मादक का प्याला?
कब [illegible] विद्रुम सी हाला?
[illegible] उसकी स्मृति में [illegible] आँखों [illegible],
आज कहाँ [illegible]"।

[illegible] वहीं दूसरी ओर [illegible] की अनुभूति को भी [illegible] है—

"क्या पूजा क्या अर्चन रे ?
उस असीम का सुन्दर मंदिर मेरा लघुतम जीवन रे।
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनन्दन रे"।

[illegible]

"शून्य में [illegible],
त्याग की हो [illegible]
इन्हीं छोटे प्यालों में आज,
[illegible]
सजा जाएं यह [illegible] सुमन,
[illegible] जीवन"।

[illegible]

उस असीम से हो जायेगा, मेरी लघु सीमा का मेल।
देखोगे तुम देव अमरता, खेलेगी मिटने का खेल।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "किसी वस्तु-समूह को दूसरों से भिन्न विशेषता उसके सौन्दर्य बोध से प्राप्त होती है। सौन्दर्य बोध जीवन की सहजात वृत्ति होने के कारण [illegible] में विशेष रहता है। मानव सौन्दर्य बोध का एक छोर बाह्य जगत् से सम्बद्ध है तो दूसरा अन्तर्जगत् से [illegible] एक सम्वेदन अन्तर्जगत् भी है। अतः उसका सौन्दर्य बोध [illegible] और अधिक [illegible] है"। [illegible]

[illegible] "हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य-चेतना के विकास की दृष्टि से छायावाद ने एक ऐतिहासिक कार्य सम्पादन किया। जिस प्रकार [illegible] की दृष्टि से हिन्दी कविता द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता में दबी हुई थी, उसी प्रकार वह रीतिकाल में सूक्ष्म सौन्दर्य के [illegible] में अज्ञात थी। [illegible] कवि को [illegible] के अतिरिक्त और कहीं सौन्दर्य का लेश भी नहीं दिखता था, वह उसी के लिए अभिनव [illegible]

था।" महादेवी ने भी छायावादी सौन्दर्य दृष्टाओं के इस सहज प्रेम को स्वीकार किया है तथा निर्लिप्त रहकर प्रकृति सौन्दर्य के प्रति विस्मय और पवित्र मुग्धता का आद्यन्त निर्वाह किया है।

प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता अथवा उस पर चेतन व्यक्तित्व का आरोपण छायावाद की अन्तरंग विशेषता है। महादेवी का मानना है कि "काव्य में प्रकृति ने नवीन रूपात्मकता के साथ जो चेतना पाई, उसने मानव-जीवन से उसे [illegible] नहीं रहने दिया [illegible] अकेली रही न मनुष्य। घनिष्ट सम्बन्ध से और भावोत्ता से दोनों समृद्ध हुए। छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिये, जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी, जिसका यह है कि प्रकृति असीम व्यष्टि और ससीम मानव को अभिन्न करने की महत्वपूर्ण कड़ी है।

महादेवी का प्रकृति-प्रेम औदात्यपूर्ण है। संवेदनशील कवयित्री ने साहित्य और अपने काव्य में प्रकृति की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है- "मेरे गीतों में प्रकृति मेरी भावानुकृति बनकर ही आ सकती थी पर उसके सम्बन्ध में कुछ कहना मेरे लिए सहज नहीं। शब्द संकेत लौकिक पृष्ठभूमि में पलते हैं। अतः अलौकिक संकेतों की अभिव्यक्ति भी लौकिक शब्द प्रतीकों से ही सम्भव है। जिन साधक कवियों ने प्रकृति को माध्यम बनाया उन्होंने भी उसकी सिद्धि के लिए उस पर चेतना का आरोपण किया और उसके रूपाकारों को स्वीकार किया।" इसकी सिद्धि के लिए कवयित्री ने प्रकृति से एकात्मक भाव की अनिवार्यता स्वीकारी है-

'प्रिय! सान्ध्य गगन मेरा जीवन' तथा 'तुम मुझमें प्रिय! फिर परिचय क्या'

[illegible] पंक्तियों में महादेवी ने प्रकृति से एकात्म स्थापित किया है। प्रकृति से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित होने से कवि स्वभावतः उसमें अपने भावों की प्रतिच्छवि खोजने लगता है। महादेवी ने चेतनामयी प्रकृति का स्वतन्त्र चित्रण भी किया है तो दूसरी ओर उन्मुक्त भाव से प्रकृति का मानवीकरण भी प्रस्तुत किया है-

"धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ वसन्त रजनी।
तारकमय नव वेणी बंधन,
शीश फूल कर शशि का नूतन
रश्मि वलय सित घन अवगुंठन,
मुक्ता हल अभिराम बिछा दे
चितवन से अपनी,
पुलकित आ वसन्त रजनी।"

प्रकृति यहाँ अभिसार का संचालन करती है। मधुरिमामयी वसन्त रजनी का अभिसारिका रूप में चित्रण महादेवी की असाधारण कल्पना का उत्कृष्ट उदाहरण है। जाने पहचाने आत्मीय शब्दों की संगीत और व्यंजना का नीड़ रचकर उन्होंने अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया है। कवयित्री की यह विशेषता है कि वे अपनी शब्द-संपदा को अपने ही परिवेश से संकलन करती हैं। लगता है कि अपने ही घर के शब्दों ने चित्रों के परिधान धारण किये हैं। मधुर रागात्मक परिवेश पर प्रकृति का मनोरंजक चित्रण करना उनकी निजी विशेषता है। इसी प्रवृत्ति के साथ कलात्मकता को भी महादेवी ने मुक्त कंठ से स्वीकारा है "काव्य जब प्रकृति का आधार लेकर चलता है तब कल्पना में सूक्ष्म रेखाओं का बाहुल्य और दीप्त रंगों का संभार स्वाभाविक हो जाता है। छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच से जीवन का

उद्गीथ है। छायावाद यदि व्यक्त अर्थों में काव्यगत है तो वह कल्पना को सौन्दर्यमय आकार देकर, उसमें [illegible] और उसमें जीवन संगीत की सृष्टि कर देता है।" उनकी कल्पना चित्रण का अनुपम उदाहरण-

मुस्काता संकेत भरा नभ,
अलि क्या प्रिय आने वाले हैं?
झोंके सिहराती मृदु के,
[illegible]
हिमकण पर आता-जाता,
[illegible]
प्राण पथिक से फिर-फिर आते,
[illegible]
अलि क्या प्रिय आने वाले हैं?

अभिव्यंजना और शिल्प की छायावादी कसौटी पर भी महादेवी की रचना पक्ष पूर्णतः सफल है। भावानुकूल भाषा शैली, चित्रात्मक वेषयोजना, अलंकार, बिम्ब तथा प्रतीकों के सार्थक प्रयोग ने उनके भावों को सहज प्रवाह दिया है। अतः छायावादी काव्य निकर्ष पर महादेवी खरी एक सार्थक उपलब्धि हैं। कविता के साथ-साथ उनका गद्य साहित्य चिन्तन प्रासंगिक और अमरत्व है। कविता में उनके निजी जीवन की व्यथा है तो गद्य में [illegible] जीवन [illegible] अभिव्यक्तियों से उनका सम्पूर्ण साहित्य ओत-प्रोत है। वे जीवन-सत्य को पकड़ कर [illegible] वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से साक्षी हैं, वे अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का, [illegible] के विरुद्ध [illegible] का उद्घाटन करती हैं। आज के भारतीय साहित्य में नारी अस्मिता और चेतना को [illegible] करने वाली पहली लेखिका हैं। उनका लेखन ही नहीं सम्पूर्ण जीवन [illegible] उस विद्रोह की कहानी है, जिसने नारी अपने लिए सुरक्षित स्थान बनाती है। नारी अस्मिता के लिए किया गया उनका यह विद्रोह [illegible] दिखाई देता है। उनमें एक आत्मीय नारी की [illegible]-भावना, [illegible], उत्सुकता, शंका, एकाकीपन, उन्माद, [illegible] आदि सब कुछ [illegible] उनका लेखन ही नहीं सम्पूर्ण जीवन [illegible] से संपृक्त है। सम्पूर्ण विश्व की पीड़ा को आत्मसात् करने वाली नीलकंठी कवयित्री को छायावादी युग ने जन्म दिया है और महादेवी ने छायावाद को जीवन।

विश्वविद्यालय में छात्र राजनीति : एक विश्लेषण

अध्ययन के उद्देश्य:-

अध्ययन पद्धति:-

सारिणी संख्या-1

क्र. सं.	विश्वविद्यालय की क्रियाकलापों पर छात्र राजनीति का प्रभाव	प्रतिशत	विश्वविद्यालय का वातावरण	प्रतिशत
1.	सकारात्मक	10	शैक्षणिक	40
2.	नकारात्मक	24	राजनैतिक	01
3.	उपरोक्त दोनों	55	सांस्कृतिक	07
4.	आंशिक	[illegible]	उपरोक्त सभी	52
	योग	100		100

उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों पर छात्र राजनीति का प्रभाव एवं विश्वविद्यालय का वातावरण

विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों [illegible] के द्वारा पठन-पाठन ही प्रभावित नहीं होता बल्कि [illegible] राजनैतिक गतिविधियाँ चुनाव, आन्दोलन [illegible] भी इससे प्रभावित होती है। [illegible] एवं शंका को [illegible] अनुशासनहीनता [illegible] सकते हैं [illegible] छात्र समितियों [illegible] छात्रों के विचार एवं व्यवहार का विस्तार करता है। [illegible] विश्वविद्यालय [illegible] सांस्कृतिक, [illegible] वातावरण भी विकसित हो सके।

उक्त उपरोक्त सारणी 1 से स्पष्ट है कि 10 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि छात्र राजनीति से विश्वविद्यालय क्रियाकलापों पर सकारात्मक तथा 24 प्रतिशत छात्रों के अनुसार यह प्रभाव नकारात्मक है। 55 प्रतिशत [illegible] मानना है कि दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं। 6 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार छात्र राजनीति से शैक्षणिक [illegible] आंशिक रूप से ही प्रभावित होती है। 40 प्रतिशत सूचनादाता विश्वविद्यालय में [illegible] को ही आवश्यक मानते हैं। 1 प्रतिशत छात्र चाहते हैं कि राजनैतिक गतिविधियाँ होनी चाहिए, 7 प्रतिशत सूचनादाता मानते हैं कि विश्वविद्यालय का वातावरण सांस्कृतिक होना चाहिए जबकि 52 प्रतिशत के अनुसार विश्वविद्यालय में सभी गतिविधियों का समन्वय होना चाहिए।

छात्र संघ चुनाव एवं राजनैतिक गतिविधियों की जानकारी:- 1964 में गठित डी० एस० कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग के अनुसार "छात्र संघ विश्वविद्यालय के [illegible] जीवन में छात्रों की [illegible] सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण [illegible] है। संगठित छात्र संघ स्वशासन, स्वानुशासन में सहायक है। छात्रों को [illegible] दिशा देता है तथा छात्रों को लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं के प्रयोग का उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान करता है।"

सारिणी संख्या-2

क्र. सं.	छात्र संघ चुनाव	प्रतिशत	राजनैतिक गतिविधि की जानकारी	प्रतिशत	छात्र राजनीति कैम्पस तक सीमित	प्रतिशत
1.	उचित	89	हाँ	72	हाँ	36
2.	अनुचित	11	नहीं	28	नहीं	48
3.					पता नहीं	16
	योग	100		100		100

उपरोक्त सारणी संख्या 2 से ज्ञात होता है कि 89 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार छात्र संघ लोकतान्त्रिक प्रक्रिया की प्रथम व्यवस्था है, 11 प्रतिशत छात्र छात्राएं इससे सहमत नहीं हैं। 72 प्रतिशत सूचनादाताओं को विश्वविद्यालय में होने वाली गतिविधियों जैसे चुनाव इत्यादि के विषय में जानकारी है, जबकि 28 प्रतिशत को कोई जानकारी नहीं है।

सारिणी संख्या-3

क्र. सं.	छात्र संघ चुनाव में मतदान	प्रतिशत	छात्र नेताओं का आपराधिक व्यवहार	प्रतिशत
1.	हाँ	90	उचित	01
2.	नहीं	10	अनुचित	99
	योग	100		100

प्रतिशत छात्र-छात्राओं का मानना है कि छात्र राजनीति कैम्पस तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, जबकि 54 प्रतिशत छात्रों [illegible] है कि छात्रों का यह भी दायित्व है कि वे समाज, राष्ट्र की बुराईयों को दूर करने में सहयोग करें।

छात्र संघ चुनाव में मतदान तथा छात्रों का आपराधिक व्यवहार:- [illegible] चुनाव प्रक्रिया की मूल [illegible] है कि वे छात्र जीवन में अपने मत को [illegible] उत्पन्न [illegible] की भली भाँति [illegible] करें। इससे सुधार [illegible] का विकास हो [illegible] लोकतन्त्र [illegible] छात्र संघ, [illegible] भी देखा जाता है कि कुछ नेता [illegible] माहौल को बिगाड़ते हैं। [illegible] धमकी, तोड़फोड़, [illegible] करते हैं तथा [illegible] एक गम्भीर समस्या है।

उपरोक्त सारणी संख्या 3 से स्पष्ट है कि 90 प्रतिशत सूचनादाताओं छात्र संघ चुनाव में अपने मत का प्रयोग करते हैं वहीं छात्र नेताओं के [illegible] स्वरूप तथा राजनीति में रुचि न होने के कारण 10 प्रतिशत मतदान नहीं करते। 1 प्रतिशत छात्र-छात्राएँ छात्र नेताओं द्वारा [illegible] की धमकी देना, तोड़फोड़ करना इत्यादि को उचित मानते हैं, 99 प्रतिशत सूचनादाता इस प्रकार के आपराधिक व्यवहार को अनुचित मानते हैं।

छात्र संघ प्रत्याशियों द्वारा अत्यधिक खर्च एवं इसका स्रोत:- [illegible] में राजनैतिक पार्टियाँ छात्र [illegible] को [illegible] अपने पक्ष में करती हैं और उन्हें दूसरे दलों के विरुद्ध [illegible] हैं।[illegible] इस प्रकार के [illegible] छात्र संघ में पहुँचते हैं तो उनसे छात्र हितों के लिए [illegible] नहीं की जा सकती।

सारिणी संख्या-4

क्र. सं.	छात्र संघ प्रत्याशियों द्वारा अत्यधिक खर्च	प्रतिशत	खर्च का स्रोत	प्रतिशत
1.	सहमत	02	घर से	20
2.	असहमत	98	राजनैतिक पार्टी	47
3.			[illegible]	33
	योग	100		100

उपरोक्त सारणी सं० 4 से स्पष्ट है कि 2 प्रतिशत सूचनादाता छात्र संघ प्रत्याशियों द्वारा अत्यधिक खर्च करने से सहमत हैं जबकि 98 प्रतिशत इससे असहमत हैं। वहीं 8 प्रतिशत सूचनादाता मानते हैं कि चुनाव में खर्च होने वाला पैसा घर से छात्रों को मिलता है। 41 प्रतिशत के अनुसार राजनैतिक पार्टी पैसा देती हैं, 31 प्रतिशत [illegible] को इसका स्रोत मानते हैं, 20 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार यह पैसा [illegible] से लिया जाता है।

सारिणी संख्या-5

क्र. सं.	राजनीति में सक्रियता का स्तर	प्रतिशत	स्वस्थ राजनीति का माध्यम	प्रतिशत
1.	राजनैतिक आन्दोलन	06	शिक्षा	46
2.	छात्र राजनीति	59	जागरूकता	33
3.	राजनीति अच्छे लोगों का काम नहीं	19	परिवार, समाज	06
4.	सक्रिय योगदान देंगे	16	उपरोक्त सभी	15
	योग	100		100

राजनीति में सक्रियता एवं स्वच्छ राजनीति का माध्यम :- [illegible]

[illegible]

निष्कर्ष एवं सुझाव:- [illegible]

[illegible] राजनीति के प्रति [illegible] दृष्टिकोण रखते हैं। [illegible] राजनीति की [illegible] चुनौती है।

संदर्भ :

[illegible]

[illegible]

Aparajita ... [illegible]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के नव गीतों में लोक-चेतना

डा० कुसुम [illegible]

जहाँ गीत गीता है, वहीं कहीं मैं हूँ।

[illegible] को गीत की संज्ञा दी जाती है। गीत अनुभूति का प्रतीक [illegible] किन्तु काव्य की [illegible] अनुभूति भी होती है। [illegible] नया और व्यापक बनाती है और [illegible]

सृजन की हलचल भूल जा देवता/अभी तो पड़ी है धरा अधबनी

[illegible] और [illegible] संघर्ष और उदासी [illegible]

अंधियारा अब न सहा जाता है/धुएँ में अब न रहा जाता है,
कारों से निकले हम/ आओ चुन बदले हम
सूनी सूनी द्वार खड़ा सूरज साथ देता है।

[illegible] गीत अभिव्यक्ति देते हैं। [illegible]

ऊँचे ऊँचे घर शिवालय/ बाहर बापू बैठे रोज
[illegible] लेकिन जलती नहीं लकड़ियाँ।

[illegible] परन्तु था चाँदनी न देखा/ओ मालिक! मैं घर से टूटने लगूँगी।

[illegible] अभिव्यक्ति है। [illegible]

दुःख के नीले रंग रंगे हो/ममता जगत की बंधु बने हो

[illegible] जीवन के कटु सत्यों की अनुभूति [illegible] आकाश की ऊँचाइयों [illegible] गीत व्यंग्य का निशान बनते हैं।

[illegible]

क्योंकि आदर्शों का पतन/ तुम्हारे [illegible] हाथ/आकाश से भी/ऊँचे उठ गये हैं
किन्तु [illegible] विज्ञान/तुम्हारा मन/कितना बौना है/आज भी।

[illegible] कल की पहचान आज आप लो/महता [illegible]/जीवन है एक बार /बार बार',
[illegible]

'छीन ले रे /छीन ले बढ़कर/ तू अपनी हाथ से रोटी/है कलम मुझको, जैसा पैदा कर/ भुजाओं में ।'
[illegible]

हो गये खालसा हम: [illegible] को
अब नहीं [illegible] महल/अपनी [illegible] से
कहीं तक [illegible] दमकल।

[illegible]

उदाहरणार्थ-
सोंधी सोंधी सोंधी माटी/कारे कारे बीज/बादल पानी दे
बोने वाली, नदी कछार में बोओगे क्या बीज/बादल पानी दे/
मैं बोऊँगा बीर बहूटी, इन्द्रधनुष सतरंग/ नये सितारे, नयी पीढ़ियाँ/ नये धान के रंग
हम बोयेंगे हरी चुनरी [illegible] और सावन की पहली तीज/बादल पानी दे।

तथा- 'आज इकाई /बाजार दहाई/ [illegible]'

इकतुम्हें फिकतुम बाबू जी, उनके बंगले पूरे सौ/उनके घर बहता है [illegible]/ हमको मुश्किल अन्न जुटाना/ [illegible]

[illegible]

[illegible]

'जागो, जागो रे मजदूर/ जागो, जागो रे किसान'

[illegible]

संदर्भ :

[illegible]

Aprajita [illegible]

भारत में महिला उत्थान और डॉ० आम्बेडकर

[illegible]

से भी छोटे और उन जैसे तीज-त्योहारों को अपनाएं। वे इस धारणा में थे कि वे सुविधाएं और सुविधाएं केवल उनके लिए हैं। [illegible] उनको [illegible] अछूत माना जाता था। यदि वे [illegible] हैं। [illegible] [illegible] उनकी [illegible] इस वर्ग के लोगों को देखना [illegible] [illegible] [illegible] कहीं बाहर जाना पड़े तो उन्हें अपने गले में [illegible] पड़ता था ताकि [illegible] [illegible] और वे उनका मुँह न देख सकें और न ही उनकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देश के दक्षिणी भाग में [illegible] [illegible] [illegible] जहाँ इन वर्गों के लोग [illegible] [illegible] [illegible] के कारण उनकी बुद्धि इतनी जड़ हो गयी थी कि वह [illegible] नहीं सकते थे। [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काम करने के लिये ही पैदा किया है।[6]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को भी [illegible] थी। उनके साथ दुर्व्यवहार [illegible] [illegible] में महिलाओं की स्थिति और भी खराब थी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उनकी दुर्दशा देखी नहीं जाती थी। डॉ० अम्बेडकर महिलाओं की स्थिति से भली-भाँति परिचित थे। [illegible] [illegible] थी।[7]

यद्यपि महिलाओं की दशा सुधारने के लिये समाज सुधारकों द्वारा प्रयत्न किये गये थे परन्तु उन लोगों के [illegible] [illegible] अम्बेडकर के प्रयत्नों में [illegible] [illegible] [illegible] वह उसी समाज का एक हिस्सा थे। उन्होंने स्वयं भी उस अपमान की पीड़ा को नजदीकी से महसूस किया था। एक बार अम्बेडकर ने कहा, "दूसरों के प्रयास एक गर्म की भाँति है लेकिन मैं तो उसकी मां हूँ। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न देखा जाता है और न सहा जाता है"।[8]

उन्होंने यह प्रण लिया था कि वे समाज में समानता लाकर रहेंगे। उन्होंने ऐसे समाज की कल्पना करते हुए कहा कि, 'मेरा आदर्श समाज वह होगा जो समानता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व के तीन सिद्धान्तों पर आधारित होगा'।[9] डॉ० अम्बेडकर महिला-पुरुष समानता के पक्षधर थे। वे महिलाओं की स्थिति को सुधारना चाहते थे। इस हेतु उन्होंने सर्वप्रथम दलित महिलाओं को उनकी स्थिति के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया।

25 दिसम्बर 1928 को महाड़ सत्याग्रह के अवसर पर वे महाड़ में दलित [illegible] में गये और महिलाओं को समझाया कि 'आप अपने को कभी अछूत मत समझो। साफ सुथरा जीवन व्यतीत करो। सवर्ण स्त्रियाँ की भाँति [illegible] महिलाएं [illegible] पहनें। [illegible] [illegible] [illegible] न करें कि तुम्हारे वस्त्र फटे पुराने हैं, यह ध्यान रखें कि वे साफ हैं। आपकी वस्त्रों को [illegible] पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा सकता और न ही कोई तुम्हें अपने विचार के [illegible] [illegible] सकता है'।[10] वे दलित महिलाओं में [illegible] [illegible] [illegible] आत्मविश्वास पैदा करना चाहते थे अतः उन्होंने उपदेश दिया कि 'अपने मन को स्वच्छ बनाओ और आत्म सम्मान की भावना अपने में उत्पन्न करो'।[11]

18 मई 1942 को नागपुर सम्मेलन में बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति देखकर उन्हें संतोष हुआ। इस अवसर पर महिलाओं को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा- 'बच्चों के विवाह में जल्दी नहीं करना। विवाह दायित्व है। इस दायित्व को तब तक अपने बच्चों पर मत लादना जब तक कि वे विवाह से उत्पन्न दायित्वों को निभाने के लिये आर्थिक रूप से सक्षम न हो जायें। जो विवाह करे वह यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि अधिक बच्चों को जन्म देना अपराध है। पैतृक दायित्व यह है कि अपने माता-पिता से अपने बचपन में जो मदद हमें मिली है, उससे अधिक मदद हम अपने बच्चों को दें। इन सबसे ऊपर प्रत्येक लड़की जो विवाह करे उसे अपने पति का सहयोग करने की शिक्षा दें। उसे अपने पति का मित्र और उसके समकक्ष बनने की प्रेरणा दें, उसकी दासी नहीं। मुझे विश्वास है कि इस राय को मानकर आप लोग अपने लिये यश और गौरव अर्जित कर सकेंगी।'[12]

30 जनवरी 1944 को 'अखिल भारतीय शेड्यूल्ड कास्ट फैडरेशन' के द्वितीय अधिवेशन में बोलते हुये डॉ० अम्बेडकर ने कहा, "मुझे यह देखकर दुःख होता है कि इस बड़ी परिषद में महिलाओं की संख्या कम है। महाराष्ट्र और

[illegible] में होने वाली प्रत्येक सभा में हजारों महिलाएं भाग लेती हैं। वहाँ महिलाएं घरों में नहीं रहती हैं और न वे घूंघट निकालती हैं। पति और पत्नी दोनों सामाजिक कार्यों में समान रूप से भाग लेते हैं। उसी प्रकार यहाँ की महिला समाज को करना चाहिये। यदि आप ऐसा करेंगे तो हमारे समाज का उद्धार जल्दी होगा'।[13] उनका पक्का विश्वास था कि यदि महिलाएं संगठित हो जायें और वे निश्चय से किसी कार्य को करें तो आसानी से कर सकती हैं और वे समाज की दशा को ऊपर उठा सकती हैं। डॉ० अम्बेडकर किसी भी समुदाय या जनसमुदाय के विकास को महिलाओं की [illegible] से मापते हैं।[14]

समाज में परिवर्तन व उत्थान लाने का मूल मंत्र है शिक्षा। क्योंकि इसी से व्यक्ति सोच निर्मित होती है, जो आत्मसम्मान के साथ जीना और अन्याय के खिलाफ लड़ना सिखाती है। अतः अम्बेडकर ने महिलाओं को शिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा, 'शिक्षा महिला और पुरुषों के लिये अति आवश्यक है। यदि आप लिखना और पढ़ना जानते हैं तो अधिक उन्नति या विकास कर सकेंगे'।[15] उनका मानना था कि महिलाएं शिक्षित होने पर उनकी लाभ व हानि समझकर कुरीतियों को निकालकर बाहर करेंगी। उनके अनुसार, "प्रत्येक पुरुषों का न होकर महिलाओं का ही है ......महिला घर की लक्ष्मी होती है। घर में कोई [illegible] [illegible], बालक न हो, इसलिये उसे सजग रहना चाहिये'।[16]

अम्बेडकर सामाजिक विकास में महिलाओं की रचनात्मक भूमिका को समझते थे। उन्होंने उनकी दशा सुधारने के लिए भरसक प्रयत्न किया। वे जब बम्बई लेजिस्लेटिव असेम्बली के मनोनीत सदस्य थे। तब उन्होंने कामकाजी महिलाओं को गर्भावस्था में सुविधा प्रदान करने की जोरदार वकालत की। उनके अनुसार, "यह राष्ट्रीय हित में होगा कि प्रत्येक भावी माता को गर्भावस्था तथा उसके बाद भी कुछ निश्चित अवधि तक काम से मुक्ति दी जाये। यह सुनिश्चित करने का दायित्व सरकार का है'।[17]

समाज में व्याप्त कुरीतियों को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से उन्होंने 'मनुस्मृति' को होली जला कर उस संविधान को नष्ट के लिये समाप्त करने का प्रयास किया। जिसके द्वारा निर्धारित नियमों के कारण महिलाओं का समाज में निम्न स्थान बना हुआ था। इसके स्थान पर उन्होंने नई इबारत लिखी जिसकी नींव स्वतन्त्रता व समानता के आदर्शों पर रखी गयी। भारतीय महिला जगत की दशा को दूर करने के लिये डॉ० अम्बेडकर ने प्रथम विधि मंत्री के रूप में हिन्दू कोड बिल का प्रारूप बनाया और इसमें ऐसे प्रावधान रखे जो समाज में पहली बार देखने में आये। विवाह के सम्बन्ध में जहाँ मुस्लिम पर्सनल लॉ में चार शादियाँ करने की आवश्यकता थी, ईसाई और पारसियों में एक समय में एक स्त्री से विवाह होते थे, हिन्दुओं में चाहे एक समय में कई स्त्रियों से विवाह कर ले ऐसी कोई कानूनी बंदिश नहीं थी। हिन्दू कोड बिल के द्वारा हिन्दुओं में समान रीति से विवाह, विवाह विच्छेद या तलाक का प्रावधान किया। एक समय में एक पति या पत्नी को रखने के लिए नियम बनाये। भारत के इतिहास में मृत पति की सम्पत्ति में विधवा पत्नी व पुत्री के साथ पुत्रियों को भी बराबर का हिस्सेदार बनाया। तलाक के लिये पति पत्नी दोनों को समान अधिकार दिलाया और तलाक प्राप्ति के लिये कड़े नियम भी लगाये ताकि तलाक एक सस्ती वस्तु या मज़ाक न बन जाए।

विधवा विवाह सवर्ण जातियों में प्रचलित नहीं था। यदि विधवा विवाह कर ले तो उसकी संतान अवैध मानी जाती थी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दुओं का कोई भी पारिवारिक लॉ नहीं था अपितु सब कुछ मान्यताओं तथा रिवाजों पर आधारित था। हिन्दू कोड बिल में दुःखित और पीड़ित पत्नी अथवा पति दोनों को विवाह विच्छेद का समान अधिकार है। सम्पत्ति में उत्तराधिकार, गोद लिया, भरण-पोषण, गुजारा आदि पर भी इस कोड में प्रावधान है। वृद्ध माता-पिता के भरण-पोषण के लिए पुत्रों या बेटों को जिम्मेदार माना गया है। एक ही समय में दो पत्नियाँ रखना दण्डनीय अपराध माना गया है। हिन्दुओं के इतिहास में पहली बार हिन्दुओं के लिए एक वैवाहिक विधि, पारिवारिक लॉ [illegible] गया। हिन्दू कोड के अनुसार किसी भी हिन्दू परिवार में जन्मी लड़की को गोद लिया जा सकता है।

डॉ० अम्बेडकर प्राय: कहा करते थे कि हिन्दू शास्त्रों में दिये प्रावधानों के अनुसार शूद्रों और अछूतों के साथ-साथ सम्पूर्ण नारी जाति पर चाहे वह किसी भी वर्ग की हो बहुत जुल्म ढाया गया है। मैं हिन्दू कोड बिल पारित कराकर महिला जगत का कल्याण करना चाहता हूँ।" डॉ० अम्बेडकर अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करने पर भी हिन्दू कोड बिल को उसके मूल रूप में पारित नहीं करवा सके। बाद में यह बिल खंडित होकर चार विधेयकों के रूप में पास हुआ। इस विधेयक पर मतभेद होने के कारण अम्बेडकर ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया।[1]

डॉ० अम्बेडकर ने संविधान में सभी को समान अधिकार दिलाने का समर्थन किया, "सम्पूर्ण देश की जनता के लिये समान नागरिक कानून ही होना चाहिए, समान नागरिक कानून हमारा अन्तिम उद्देश्य है।" ऐसी व्यवस्था करके वह महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाना चाह रहे थे। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 15:1 द्वारा लिंग के आधार पर किये जाने वाले भेद को समाप्त किया। महिलाओं को पुरुषों के समान सारे राजनीतिक अधिकार दिये गये। अनुच्छेद 14 के द्वारा महिला को पुरुष के समान बराबरी का दर्जा दिलाया।" अम्बेडकर चाहते थे कि जब महिलायें भी सभी सामाजिक क्रियाओं में पुरुषों की तरह भाग लेंगी तो वे कभी पीछे नहीं रहेंगी।[2]

मूल अधिकारों में महिला पुरुषों को समान अधिकार दिये जाने के समर्थक अम्बेडकर ने उन्हें आजीविका का पर्याप्त साधन प्राप्त करने के लिये भी अलग स्थान लिखा जिसको 39 वें अनुच्छेद में रखा गया है। वे महिला व पुरुषों में समानता का भाव पैदा करना चाहते थे। वे समान कार्यों के लिये समान वेतन देने के पक्ष में थे।[3] इस प्रकार डॉ० अम्बेडकर ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में अपने विचारों व कार्यों के माध्यम से महिला हितों के संरक्षण हेतु कार्य किया।

सन्दर्भ :-

1. [illegible], "डॉ०भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व और विचार", नई दिल्ली, [illegible], 2001, पृ० 130
2. [illegible], "[illegible]" [illegible], दिल्ली 1997, पृ० 28
3. वही- पृ० सं० [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible], Edited Book, डॉ० अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व, [illegible], पृ० सं० 46
6. [illegible]
7. [illegible], "[illegible]" दिल्ली : [illegible], 1992, पृ० 27
8. वही
9. [illegible], पृ० सं० 104-107
10. [illegible], डॉ०भीमराव अम्बेडकर, [illegible], 1996, पृ० 89
11. [illegible], पूर्वोक्त पृ० सं० [illegible]
12. [illegible], पूर्वोक्त पृ० सं० [illegible]
13. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० [illegible]
14. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० 120
15. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० [illegible]
16. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० 25
17. [illegible], "डॉ०भीमराव अम्बेडकर एवं स्त्री" [illegible], अंक 2, जुलाई-दिसम्बर 2006, पृ० [illegible]
18. [illegible], पृ० 125
19. [illegible], "डॉ० बाबा साहिब अम्बेडकर" [illegible], 2005, पृ० 249
20. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० 45
21. [illegible], पूर्वोक्त, पृ० सं० 116
22. वही, पूर्वोक्त, पृ० सं० 70

Apragita [illegible]
Vol. 7 [illegible] 2016
ISSN [illegible]

अजन्ता भित्तिचित्रों में -शोक भावव्यंजना

डॉ० स्वर्णलता मिश्रा*

अजन्ता गुफा नं० 17

कलाकृति उन परिस्थितियों में मानव के मस्तिष्क की उपज है, जब मानव मस्तिष्क यथार्थ जगत से परावर्तन कर लेता है और कल्पना प्रदेश में विचरण करने लगता है। कला-मनोवृत्तियों से बाहर आने लगती है। मनोवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं। अतः कला भी विकसित हो जाती है। इसीलिये कला सुन्दर आकारों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। कलागत सौन्दर्य चिन्तन है, आवश्यक है। वह कभी समान नहीं होता। [illegible] के अनुसार कला बनती रहती है। सभी कलाएँ संगीत हो या नृत्य, चित्र हो या शिल्प-स्थापत्य [illegible] से प्रकाशित रहती हैं। कलाओं में मानव मन की बात ले जाने की अद्भुत क्षमता है। कलायें मानव मन की भावलोक में पहुँचकर ही नहीं ले जाती अपितु वे उसकी भावी भावनाओं का साधारणीकरण/अलौकिकरण भी करती हैं।

अजन्ता भित्तिचित्रों का भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपनी श्रेष्ठता के लिए अद्वितीय स्थान रहा है। इसकी प्रसिद्धि विश्वव्यापी है। जॉन ग्रिफिथ, फर्ग्युसन तथा बर्जेस जैसे विदेशी कला मर्मज्ञों ने इन कलाओं को देख कर इनकी सर्वाधिक प्रशंसा की है। मार्ग में प्रकाशित विवरण के अनुसार:- "अजन्ता वह जादुई शब्द है जिसका प्रयोग हम प्रतीक रूप में अतीत की महानता के लिये करते हैं।"[1]

अजन्ता भित्तियों को बुद्ध के मार्ग पर अग्रसर करने वाली कलाओं में चित्रित हार्दिक एवं मानसिक भाव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भित्तिचित्रों में अंकित भावों से प्रत्येक भाव हर समय मिल रहा है, अजन्ता भित्तिचित्रों में वे स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। पद्मपाणि की करुणा, भिक्षुकन्याओं में रति, योद्धाओं में क्रोध, बुद्ध की आकृति में निर्वेद, माता और पुत्र में वात्सल्य की अभिव्यंजना है। यद्यपि अजन्ता के कलाकार सभी भावों को चित्रित करने में अद्वितीय रहे, किन्तु सर्वाधिक बौद्ध धर्म का सहानुभूति पूर्ण चित्रण उन्होंने शोकभाव का ही किया है। इसका कारण-बौद्ध धर्म दुःखवाद पर आधारित था। बौद्ध धर्म में व्याप्त दुःखभाव की इस भावना ने कलाकारों को शोकभाव के चित्र सृजन के लिए प्रेरित किया होगा।

वर्तमान समय तक आते-आते गुफाओं की छतों से चित्र काफी धूमिल हो गए हैं अतः सम्भव है उन नष्ट चित्रों में भी शोक भाव की व्यंजना के चित्र रहे हों जो अब प्राप्त नहीं हैं। वर्तमान में शोक भाव विषयक प्रमुख चित्र निम्नलिखित गुफाओं में प्राप्त होते हैं :-

गुफा नं. एक : 1. बोधिसत्व पद्मपाणि अवलोकितेश्वर 2. महाजनक का गृहत्याग 3. शिवि राजा को विलाप करती रानी।

*[illegible]

[illegible]

... सर्वाधिक करुणा आकृति के शोक में डूबे हुए अधखुले नेत्रों में ... [illegible] ... इस प्रकार अंग-प्रत्यंग में शिथिलता दर्शाकर ... [illegible] ... प्रति बुद्ध की करुणा की अभिव्यंजना में कलाकार सफल हुआ है।

[illegible]

[illegible]
गुफा नं. 1

[illegible]

राजा की भेंट
गुफा नं. 1

[illegible] ... और नारी का प्रत्येक भाव प्रार्थना करता हुआ प्रतीत होता है। [illegible]

[illegible]

[illegible] ... चित्रित हुआ है।

[illegible]

'सर्वनाश' के चित्र में ... [illegible]

[illegible]

करुणा :

1. "Ajanta is a magic word, which we use as symbol of our past greatness. [illegible]
2. [illegible] "AJANTA" P. 76
3. [illegible] "Ajanta", part I, P. 26
4. [illegible] "Indian Psychology ..." [illegible]
5. [illegible] "History of Fine Arts in India and Ceylon" P. 93
6. [illegible]

मानवीय अधिकारों की वैदिक पृष्ठभूमि

डॉ० अपराजिता

[illegible]

[illegible]

है। [illegible] अधिकारी हो सकता है। [illegible] मानव अधिकार के विषय में [illegible] अधिकार [illegible] आधुनिक [illegible] अधिकार [illegible] अधिकारी [illegible] अधिकारी तु विधिवदधीत [illegible] काम्यनिषिद्ध [illegible] साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता [illegible] विधिपूर्वक वेद-वेदांगों का अध्ययन [illegible] सम्पूर्ण पापों से मुक्त [illegible] अधिकारी है। [illegible] अधिकारी नहीं [illegible] वही वास्तविक [illegible] अधिकारों [illegible]

सन्दर्भ –

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible] (गीता 3.35)
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible] 'धर्म एवं मानव अधिकार', पृ. सं. 48
12. [illegible]
13. [illegible]

Aparajita [illegible]
Vol. 2 [illegible] Dec. 2018
ISSN [illegible]

शांति का धर्म इस्लाम

डा० अर्चना मिश्रा*

इस्लाम, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- इस्लाम के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई० में अरब के शहर मक्का के कुरैश कबीले में हुआ था। पिता के [illegible] बचपन में ही देहान्त हो जाने के कारण आपका पालन-पोषण चाचा अबू-तालिब ने किया। 25 वर्ष की आयु में मुहम्मद साहब का विवाह मक्का के एक अत्यन्त समृद्ध और सम्मानित परिवार की विधवा महिला खदीजा बीबी से हुआ। अपनी [illegible] और ईमानदारी के कारण हजरत मुहम्मद मक्का में अल-अमीन (विश्वसनीय) के नाम से विख्यात हुए।

इस्लाम के उदय के पूर्व अरबी समाज [illegible] तथा अनेकों अंधविश्वासों तथा कुरीतियों से ग्रस्त एक पतनोन्मुखी समाज था। अरब के लोग बद्दू कहलाते थे। [illegible] समाज घोर मूर्तिपूजक था। तत्कालीन अरब में [illegible] सबसे अधिक प्रतिष्ठा काबा के "[illegible]" नामक एक विशाल [illegible] की थी। सम्पूर्ण अरब कुरीतियों और बुराइयों का गढ़ बन चुका था। केवल अरब ही नहीं उसके पश्चिम में स्थित विशाल रोमन साम्राज्य तथा दूसरी ओर स्थित ईरानी साम्राज्य भी विलासिता के पंक में बुरी तरह डूबे हुए थे तथा वहाँ धर्म सामन्तों के [illegible] बन गया था। इसी ऐतिहासिक सामाजिक पृष्ठभूमि में 'इस्लाम' का जन्म हुआ।

इस्लाम धर्म का प्रवर्तन मुहम्मद साहब ने सोचकर नहीं किया था बल्कि इसका उन्हें इलहाम (समाधि अथवा [illegible] की अवस्था में दर्शन) हुआ था। 40 वर्ष की आयु में मुहम्मद साहब को प्रथम बार [illegible] मक्का से 6 मील की दूरी पर स्थित "हिरा" (हिरा नामक गुफा) में [illegible] अल्लाह का पवित्र ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद समय-समय पर उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त होता रहा जो पवित्र पुस्तक कुरान में संकलित है।

मुहम्मद साहब और उस धर्म का इस्लाम हुआ तबसे लोग उन्हें "पैगम्बर", "नबी", और "रसूल" कहने लगे। चूँकि हजरत साहब के माध्यम से अल्लाह का पैगाम पृथ्वी पर पहुँचा अतः वे "पैगम्बर" कहलाये। "नबी" का अर्थ है- "[illegible] उपयोगी ज्ञान की घोषणा"- चूँकि मुहम्मद साहब द्वारा प्रवर्तित ज्ञान ईश्वर ही था, अतः वे नबी कहे गए और उनसे ही "नबी" का अर्थ ईश्वर और समझदार व्यक्ति (मनुष्य) के बीच [illegible] दूत भी हो गया। "रसूल" का अर्थ भी 'प्रेषित' या दूत होता है। मनुष्यों और अल्लाह के बीच पैगाम का कार्य करने के कारण वे रसूल भी कहे गए।

'कुरआन' अरबी भाषा के शब्द किरा से निकला है जिसका अर्थ है 'समीप ले जाना', अतएव कुरआन वह ग्रन्थ है जो लोगों को खुदा के समीप ले जाता है। मान्यता है कि कुरआन की आयतें मुहम्मद साहब को इलहाम की अवस्था में, कुल 23 वर्षों की अवधि में फरिश्तों के माध्यम से प्राप्त हुई थी। इन 23 वर्षों में से मुहम्मद साहब 13 साल मक्का में और 10 साल मदीने में थे। हजरत साहब ने जो धर्म चलाया था वह विश्वबन्धुत्व, सामाजिक समानता, दया और क्षमाशीलता के आदर्शों पर आधारित एक प्रगतिशील व शांतिप्रिय धर्म था। उसके धर्मोपदेश अत्यंत सरल थे अतः उनके अनुयायियों की संख्या तेजी से बढ़ी। पैगम्बर मुहम्मद साहब ने तत्कालीन पतनोन्मुख अरब समाज को अनेक कुरीतियों से मुक्त किया। धर्म के आडम्बरों व पूजा-पाठ को तोड़ दिया। 'रोजे' रखने की आज्ञा देकर अनियंत्रित व अव्यवस्थित खान-पान की प्रवृत्तियों पर रोक लगाई। 'जकात' के महत्त्व को स्थापित कर लोगों को संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर जरूरतमंदों की मदद के लिए प्रेरित किया तथा 'हज' द्वारा प्राचीन धर्मस्थलों की यात्रा की परम्परा को

*[illegible] (कालिन्दी [illegible])

पुनर्स्थापित किया। मुहम्मद साहब द्वारा दिए गए अल्लाह के पैगाम पर ईमान (विश्वास) लाने वाले 'मुस्लिम' (आत्मसमर्पण या स्वयं को अल्लाह के हवाले कर देने वाले) कहलाये।

जनसाधारण में बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद, मुहम्मद साहब द्वारा प्रचारित 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) [illegible] मूर्तिपूजक विरोधी सिद्धान्तों ने उनके अपने ही कबीले कुरैश के प्रभावशाली सरदार उनके विरुद्ध हो गए। [illegible] यहाँ तक विरोधियों द्वारा हर प्रकार की प्रताड़ना व अपमान धैर्यपूर्वक सहन करने के उपरान्त अन्ततः [illegible] उन्हें मक्का छोड़कर मदीने को हिजरत* की। लेकिन मदीने में भी जब उनके मक्का के विरोधियों ने [illegible] तब आत्मरक्षा और प्रतीकार के लिए 'जिहाद' (धर्मयुद्ध) तथा अन्यायी अत्याचारी काफिरों [illegible] मूर्तियों (बुतपरस्ती) को नष्ट करने वाली आयतें अल्लाह की ओर से पैगम्बर साहब पर उतरी। [illegible] साहब द्वारा अन्याय व अत्याचार की समाप्ति के लिए प्रारंभ जिहाद में लगातार उनकी विजय होती गई। [illegible] (अर्थात् मक्का विजय) के दिन उसी मक्का में जहाँ कभी [illegible] घोर विरोध और आतंक का वातावरण था, [illegible] का स्वागत हो रहा था। इस अवसर पर उदारता की मूर्ति नबी ने अपने विरोधियों [illegible] साहब और उनके अनुयायियों पर [illegible] सहा था, [illegible] क्षमादान का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस्लाम का आरंभ एक नवीन धर्म के रूप में हुआ किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों ने उसे राजनैतिक [illegible] इस्लामी धर्मराज्य के पहले नेता या खलीफा स्वयं मुहम्मद साहब हुए। नबी के बाद उनके द्वारा स्थापित [illegible] खलीफा क्रमशः हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान तथा हज़रत अली हुए। उस काल में [illegible] के शासक थे और धर्मगुरु भी। आरम्भिक काल के चार खलीफाओं ने सादगी, न्यायप्रियता, सौजन्य और [illegible] इतना उत्कृष्ट उदाहरण उपस्थित किया कि इस्लाम का आदर्श पक्ष बहुत ऊँचा उठ गया। [illegible] परिस्थितियाँ उत्पन्न होने के कारण मदीने की ओर हिजरत करने के बाद के घटनाक्रम ने यह निश्चित कर दिया [illegible] नए धर्म के प्रसार और बिखरी हुई अरब शक्ति के एकीकरण के लिए संगठन के साथ संघर्ष भी आवश्यक [illegible] था।

अत्याचार के विरुद्ध तलवार उठाना जायज़ ठहराये जाने पर भी मुहम्मद साहब और उनके बाद खलीफाओं [illegible] स्त्रियों में सैनिकों को युद्ध से रोकने के स्पष्ट निर्देश थे।

सन् 622 ई० में मुहम्मद साहब ने मदीने की ओर हिजरत की थी। इसी वर्ष से इस्लाम का सम्वत् [illegible] जाता है। अपने उद्भव के बाद मात्र अस्सी वर्षों की अवधि में ही इस्लाम ईरान, इराक और उत्तर अफ्रीका में फैल [illegible] साथ-साथ एक ओर भारतवर्ष की सीमा तथा दूसरी ओर अतलांत महासागर के तट तक पहुँच चुका था। हिजरत के सौ वर्ष पूरे होते होते (722 ई० तक) इस्लाम एक अत्यंत शक्तिशाली धर्म के रूप में स्थापित हो चुका था। [illegible] प्रसिद्ध प्राचीन रोमन साम्राज्य के निर्माण में लगभग 600 वर्ष लगे थे। शक्तिशाली ईरान राज्य प्रायः एक हजार वर्ष तक रोमन साम्राज्य के पड़ोस में रहकर भी अपनी सत्ता कायम रख सका था पर अरब के धर्मयोद्धाओं के सम्मुख खड़ा नहीं रह सका। इन ऐतिहासिक तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में इस्लाम का विस्तार [illegible] चमत्कारिक ही प्रतीत होता है।

किन्तु अरबी साम्राज्य के विस्तार के साथ आये ऐश्वर्य और वैभव के साथ भोग-विलास की इच्छा को पोषण मिला। बढ़ती समृद्धि के पीछे-पीछे इस्लाम में अन्याय, अत्याचार और कपटपूर्ण राजनीति का भी प्रवेश हो गया। [illegible] रोकने के लिए पूर्व खलीफाओं ने सादगीपूर्ण जीवन का संदेश दिया था, इस साम्राज्य को [illegible] दीमक की तरह खाने लगे और खलीफा पद के लिए होने वाले झगड़ों से मुस्लिम साम्राज्य के सुदृढ़ आधार में दरार पड़ [illegible]

*हिजरत - [illegible]

शुरू हो गई। मुहम्मद साहब ने जो धर्म चलाया था वह शांति और आपसी भाईचारे का धर्म था, कालान्तर में [illegible] में पड़कर उसका रूप बदल गया। [illegible] जिन देशों में इस्लाम का प्रसार हुआ उनमें से किसी [illegible] कोई विशेष [illegible] धारणा नहीं थी। अनेक बर्बर जातियों के इस्लाम में आने के बाद, अतिला, चिंगेज़ खान जैसे हूण, मंगोल, [illegible] तथा महमूद गजनवी और तैमूर जैसे तुर्क लुटेरों को धर्म परिवर्तन के साथ ही लूट पाट, खून खराबे का एक नया कानून भी मिल गया।

प्रारम्भिक परिचय : अर्थ तथा आदर्श-

इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ – 'शांति में प्रवेश करना' होता है। इस धर्म का पालन करने वाला –अर्थात् 'मुस्लिम' वह व्यक्ति होता है जो परमात्मा तथा मनुष्य के साथ पूर्ण शांति का संबंध रखता हो।' अतएव इस शब्द का लाक्षणिक अर्थ होता है- वह धर्म जिसके द्वारा मनुष्य भगवान की शरण लेता है तथा मनुष्यों के प्रति अहिंसा और प्रेम का बर्ताव करता है।

इस्लाम धर्म के मूल में **कुरआन, सुन्ना और हदीस है।** कुरआन वह ईश्वरीय ग्रंथ है जिसमें मुहम्मद साहब के पास अल्लाह द्वारा भेजे गए संदेश संकलित है।

सुन्ना में पैगम्बर साहब के कृत्यों का उल्लेख है और हदीस वह पुस्तक है जिसमें मुहम्मद साहब के उपदेश संकलित है। साथ ही इसमें उनकी जीवनचर्या का उल्लेख व सूचना भी मिलती है।

इस्लाम के तीन अंग है- ईमान, इबादत, और इहसान।

ईमान (धार्मिक विश्वास) का अर्थ अल्लाह में, दूत पैगम्बर और क़यामत के दिन का यकीन लाना है। नबी द्वारा उद्घोषित सत्य की स्वीकृति को 'ईमान' और उसकी अस्वीकृति को कुफ्र कहते हैं। ईमान का सर्वोच्च रूप 'तौहीद' तथा 'कुफ्र' का सबसे बुरा रूप 'शिर्क' (मूर्तिपूजा) है।

खुदा की बंदगी या प्रार्थना में लीन **इबादत** है और **इहसान** का अर्थ नैतिक आचरण है।

इबादत के मुख्य पांच 'अरकान' (स्तंभ) माने गए है-

(i) **कलिमा पढ़ना**- ''अशहदु अन ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का उच्चारण करना। यह इस्लाम का मूलमंत्र है जिसपर इस्लाम तौहीद (एकेश्वरवाद) आधारित है। इसका अर्थ है- अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद उसके रसूल है।''

(ii) **नमाज़ (प्रार्थना या सलात)**- अर्थात् दिन में पाँच बार अल्लाह का स्मरण करना। जुमे की नमाज़ सामूहिक रूप से अदा की जाती है और यह इस संगठन का मजबूत आधार है।

(iii) **रोज़ा रखना**- अर्थात् रमजान माह (इसी माह में पहली पहल कुरआन उतरा था) में सूर्यास्त के बाद केवल एक बार भोजन करना व संयम पूर्वक रहना।

(iv) **ज़कात (अनिवार्य दान)**- अपनी आय का ढाई प्रतिशत दानस्वरूप देना। इसका उद्देश्य समाज के [illegible] का पालन पोषण व मस्जिदों के खर्च की व्यवस्था है।

(v) **हज**- इसके अन्तर्गत मक्का-मदीना जैसे पवित्र स्थलों की यात्रा है।

इबादत के उपरोक्त पाँच अरकानों के अतिरिक्त इस्लाम के अनुयायी जिहाद (धर्मयुद्ध) को भी आवश्यक मानते

है। इस्लाम में जिहाद दो प्रकार का होता है- जिहादे-असगर अर्थात छोटी जिहाद जिसमें काफिरों के विरुद्ध [illegible] किया जाता है और जिहादे-अकबर अर्थात बड़ी जिहाद जिसमें मनुष्य स्वयं अपनी वासनाओं से [illegible] [illegible] जिहाद शब्द का अर्थ है- संघर्ष। मानव जीवन में संघर्ष के तीन क्षेत्र हैं। (1) [illegible] के विरुद्ध संघर्ष (2) इन्द्रियों, वासनाओं के विरुद्ध संघर्ष [illegible] अबू दाऊद (जिन शैतान) [illegible] 'जालिम के सामने सत्य कहना सबसे अच्छा जिहाद कहा गया है।' [illegible] किन्तु [illegible] और उलेमाओं ने जिहाद को मात्र युद्ध से संबंद्ध कर इसका स्वरूप ही [illegible] [illegible] को दो भागों में बाँट दिया।'

[illegible] सामान्य अर्थ और प्रसंग रूप से भाषान्तर करते हैं। [illegible] आर्थिक कारण का देश जहाँ मुस्लिम [illegible] ऐसे गैरमुस्लिम देशों से था जिनसे युद्ध करने से इस्लाम [illegible] [illegible] अर्थात युद्ध स्थल [illegible] लोगों से युद्ध को एक धार्मिक कृत्य का दर्जा दे दिया गया। इस प्रकार इस्लाम में [illegible] नहीं माना जाता है। कुरान में व्यक्तिगत आचार के विचार, [illegible]

इस्लाम का [illegible] के साथ ही राजनीति, न्याय, शासन, सैन्य-संगठन, शांति के विषय [illegible] [illegible] व्यक्ति एवं समाज जीवन में शांति की सर्वोच्चता स्थापित करने के उद्देश्य से कुरान [illegible] गई है। मात्र हिंसा ही नहीं बल्कि किसी भी [illegible] लड़ाई झगड़े व हिंसा की भर्त्सना की गई है। [illegible] भय, आतंक, अलगाव और अंततः अशांति का जन्म होता है, इस [illegible] अन्याय और शोषण का परिणाम [illegible] मानव मात्र के लिए आदर्श लौकिक जीवन के साथ-साथ उसके [illegible] दृष्टिगत रखते हुए कुरान में [illegible] स्पष्ट निर्देश उपलब्ध है। पवित्र पुस्तक कुरान 'अल्लाह' को सर्वशक्तिमान निष्पक्ष [illegible] [illegible] मानती है। इसके अनुसार मनुष्य को अपने जीवन [illegible] के अंतिम [illegible] होना पड़ेगा। अतः इस जीवन में उसके सारे प्रयत्न [illegible] 'आखिरत' में अल्लाह के सम्मुख [illegible] को [illegible] में सफल होने के लिए ही होने चाहिए। ईश्वर की [illegible] 'अल्लाह' के समक्ष अपनी 'आखिरत' [illegible] करने के लिए [illegible]। कुरान-जिसमें ईश्वर के पैगम्बर मुहम्मद को भेजे संदेश संकलित हैं। [illegible] इस प्रकार इस्लाम के साथ [illegible] के संबंध में एक स्पष्ट दृष्टिकोण है। [illegible] [illegible] की [illegible] है। इस संबंध में निम्नांकित उद्धरणों से यथेष्ट प्रकाश पड़ेगा-

ईश्वर की सर्वोच्चता जो नेकी की राह पर चलने के लिए प्रेरित करेगी-

- निःसंदेह अल्लाह सर्वशक्तिमान [illegible] है।[1]
- जान लो सारी शक्ति और [illegible] अल्लाह के ही हाथ में है और अल्लाह ही कठोर दंड देने वाला है।[2]
- ज़मीन और आसमानों के खज़ानों की कुंजियाँ उसी के पास है और जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार [illegible] है वही घाटे में रहने वाले हैं।[3]
- [illegible] अल्लाह के रसूल हैं।[4]
- जिसने रसूल की आज्ञा का पालन किया उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया।[5]

कुरान मानव जीवन का लक्ष्य "लक-अल्लाह" अर्थात ईश्वर मिलन को मानता है और ईश्वर [illegible] आखिरत की जवाबदेही में सफल होने के लिए इसी जन्म में प्रयास करने होंगे। कयामत के बाद जन्नत मिले

दोज़ख इसका फैसला इसी जन्म में कर्मों से होता है। **कर्मफल की अवधारणा में विश्वास दृढ़ होने से मनुष्य अपकर्म छोड़ने के लिए प्रेरित होता है**- दृष्टव्य हैं कुछ उद्धरण-

- '......जिसने मौत और ज़िन्दगी को आविष्कृत किया ताकि तुम लोगों को आज़मा कर देखे कि तुममें से कौन अच्छा कर्म करने वाला है, वह प्रभुत्वशाली भी है और क्षमा करने वाला भी।'[11]
- 'अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके नबी पर जो उसके आदेशों को मानता है.....और उसके अनुसरण करो, आशा है तुम सीधा मार्ग पा लोगे।'[12]
- 'हर व्यक्ति का दर्जा उसके कर्मों के अनुसार है और तुम्हारा रब लोगों के कर्मों से बेखबर नहीं है।'[13]
- '...और जो बुराई लेकर आयेगा, ऐसे सब लोग औंधे मुँह आग में फेंके जायेंगे। क्या तुम लोग इसके सिवा कोई और बदला पा सकते हो कि जैसा करो वैसा भरो?'[14]

लौकिक जीवन में शांति और समरसता बनाये रखने के लिए आदर्श व्यवहार-

- '...ईश्वर कायर और बिगाड़ पसंद नहीं करता है।'[15]
- '.....और अगर तुम माफ कर दो और टाल जाओ तो निःसंदेह अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला है'[16]

कुरान के अनुसार सभी के साथ अच्छा व्यवहार एक धार्मिक कर्तव्य है-

- '...और अच्छा व्यवहार करते रहो, माता पिता के साथ, [illegible] संबंधियों के साथ बल्कि दूर वाले पड़ोसियों के साथ भी।'[17]

अन्याय, शोषण और बेईमानी के संबंध में-

- जिन लोगों ने तुमसे दीन के बारे में जंग नहीं की और न तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई और इंसाफ का सुलूक करने से खुदा तुमको मना नहीं करता। खुदा तो इंसाफ करने वालों को दोस्त रखता है।[18]
- जो लोग जुल्म के साथ यतीमों का माल खाते हैं दरअसल वह अपना पेट आग से भरते हैं।[19]
- खुदा सूद (ब्याज) को ना-बूद (बेबरकत) करता है और खैरात (दान) को बरकत बख्शता है। और खुदा किसी नाशुक्रे, बुरे अमल वाले को पसंद नहीं करता।[20]
- तुम भी मुल्क में फ़िसाद न पैदा करो। न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो, तौल में कमी न किया करो।[21]
- एक मीठा बोल और किसी अप्रिय बात पर लोगों का क्षमा करना उस दान से अच्छा है जिसके पीछे दुख हो। ......अल्लाह धनिवान (निस्पृह) है और सहनशीलता उसका गुण है।[22]

कथन : इस्लाम में हिंसा - अतीत एवं वर्तमान

इतिहास में इस्लाम पर बार बार यह आरोप लगाया है कि उसका प्रसार तलवार द्वारा किया गया। "[illegible] के [illegible] साम्राज्य [illegible] को उसके एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में तेज से तेज [illegible] को भी पाँच माह का समय लग जाता था, इसलिए तत्कालीन परिस्थिति में इस्लाम का अत्यंत तीव्रता से प्रसार इतिहास में भी आश्चर्य का विषय है।[23] इस परिप्रेक्ष्य में मात्र बाहुबल को इस्लाम के तीव्र प्रसार के मूल में नहीं माना जा सकता है क्योंकि किसी भी धर्म की स्वीकृति उसी समाज में होती है जिसके सदस्य उसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं। यह भी एक

[illegible]

[illegible] जबरदस्ती [illegible] बल्कि [illegible]

[illegible] इस्लाम [illegible] परिवर्तन [illegible] सहिष्णुता [illegible]

- 'दीन इस्लाम (इस्लाम धर्म) में किसी पर कोई जबर्दस्ती नहीं है' [illegible]
- 'तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म' [illegible]
- [illegible]

[illegible] इस्लाम [illegible] आपसी भाईचारा, समानता, न्याय, [illegible] ईश्वर की प्रसन्नता का लक्ष्य [illegible] इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरआन के अतिरिक्त विभिन्न हदीस, जिनमें मुहम्मद साहब के उपदेश संकलित हैं, में भी अनेक स्थानों पर हिंसा विरोधी स्वर अत्यंत स्पष्ट है।

- '......और जो लोग तुमसे लड़ते हैं तुम भी खुदा की राह में उनसे लड़ो मगर ज्यादती (अत्याचार) न करना कि खुदा ज्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता।'
- 'सभी आदमियों में अल्लाह तआला को तीन शख्स बुरे मालूम होते है - पहले हरम में जुल्म करने वाला, दूसरा इस्लाम में जाहिलियत का तरीका इख्तियार करने वाला, तीसरा नाहक खून का चाहने वाला।'
- 'अगर मुसलमान [illegible] दीन (धर्म) में [illegible] होती रहेगी।'
- 'दया करने वाले पर महादयावान (अल्लाह) दया करता है। तुम धरती वालों पर दया करो, तुम पर आकाश वाला दया करेगा।'

इस प्रकार इस्लाम में सामाजिक जीवन में मानवीय दृष्टि विकसित करने के लिए, अल्लाह में विश्वास, संयम और परिष्कृत आचरण का विचारात्मक सिद्धान्त (Philosophical Approach) और इन्हें क्रियात्मक रूप देने के लिए, नमाज, रोजा, ज़कात, हज की व्यवस्था (Functional Approach) सुनिश्चित की गई है। इस्लामी सिद्धान्तों का

... कोई धर्म नहीं होता, अमेरिका, बेल्जियम, पेरिस, सीरिया, बगदाद, पेशावर, ... और ... [illegible] विश्व में कहीं भी होने वाली इस तरह की गतिविधियों ... [illegible] ... के इतिहास में अंधेरे की इबारत लिखने वाले ... [illegible] ... के होने का दावा कैसे कर सकते हैं? दुनिया का हर धर्म प्रेम और करुणा ... [illegible] ... इन सभी के लिए जगह ही नहीं है।

आतंकवाद से ... एक लम्बी लड़ाई है जो विश्व में शांति की स्थापना चाहने वाले सभी लोगों को ... [illegible] ... एक दूसरे पर आक्षेप लगाने के बजाय एक जुट होकर लड़नी ... [illegible] ... लोगों को कोशिश होनी चाहिए कि वे धर्म के कल्याणकारी और ... [illegible] ... लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं के प्रगतिशील मूल्यों से जोड़ने की कोशिश ...

सन्दर्भ :-

[illegible]

Aprajita Shodh Patrika
Vol. 3 Jan-Dec. 2016
ISSN 2454 - 4710

भारतीय कला के सन्दर्भ में रामायण के नैतिक मूल्य

डॉ० अलका आर्य*

कला मनुष्य के भावों और कल्पना को शिक्षित, सुसंस्कृत, अनुशासित और प्रभावित करने का एक प्रभावी माध्यम है। कलाएं जीवन की अभिव्यक्ति होने के कारण समाज के विभिन्न स्तरों पर धार्मिक और सामाजिक उत्थान में अपना अमूल्य योगदान भी देती रही हैं। भारतीय ललित कलाओं- साहित्य, संगीत, नृत्य-चित्र, मूर्ति और वास्तुकला की सुदीर्घ यात्रा को देखते हुए हम यह मान सकते हैं कि कलाएं विभिन्न धर्मों के प्रचार-प्रसार में लगी रहीं। निःसंदेह कलाओं में जन-मानस को आकर्षित करने की अपार क्षमता होने के कारण वह समाज में किसी भी विचार, आचार विचार और आदर्श को सहजता से प्रचलित कर सकती हैं। भारतीयों का जीवन प्राचीन काल से ही धर्मगत उत्कंठा से अनुप्राणित हुआ। जिसमें नैतिक मूल्यों का आचरण अभिव्यक्तियों तथा जनमानस के प्रति [illegible] की भावना का सन्निवेश था।[1] वास्तव में भारत में धर्म के प्रति रुचि और आस्था बढ़ाने के लिए कला का प्रयोग इतने व्यापक रूप में हुआ कि आधुनिक इतिहासकारों, पुरातत्वविदों तथा कला इतिहासज्ञों ने उसका अध्ययन करते हुए विभिन्न धर्मों और धार्मिक मतों के आधार पर ही उसका नामकरण कर दिया।[2]

भारतीय संस्कृति में कला को आत्म विकास और सामाजिक परिष्कार का साधन माना गया है। भारतीय विचारकों ने भी कलाओं के धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष पर बहुत बल दिया है। विष्णुसूत्र में कहा गया है कि कला धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्रदान करने वाली होती है। शिल्प सूत्र [illegible] में कहा गया है कि श्रेष्ठ कला परमानन्दलीनता में सहायक होती है।[3] ईश्वरीय गुणगान को ही कलाओं का उत्तम लक्ष्य मानते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि जब कोई कवि सांसारिक लोगों का गुणगान करता है तो वाणी अपना सिर धुनकर पछताने लगती है। संगीत रत्नाकर में शार्ङ्गदेव ने कहा है कि जहाँ भक्त लोग गायन करते हैं वहीं ईश्वर का निवास होता है।[4] इन्हीं मान्यताओं को लेकर धार्मिक और आध्यात्मिक कलाकृतियों की रचना मानव सभ्यता के आदिकाल से होती रही है। कला शास्त्रों में मानव कल्याण की भावनाओं का सबसे बड़ा कार्य माना गया। चारित्रिक उत्थान के लक्ष्य प्रकाश में मानव कल्याण की भावना को यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने भी महत्वपूर्ण माना। भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि प्रायः दार्शनिक रही है। दार्शनिक प्रणालियों, सिद्धान्तों और मान्यताओं का आश्रय लेकर ही भारतीय कला और संस्कृति की धारा प्रवाहित होती रही। दार्शनिक, लेखक, कवि, कलाकार और इतिहासकार अपने कार्यों व कृतियों में उच्च दार्शनिक और नैतिक तत्वों को लोक स्तर पर प्रतिष्ठ करने में संलग्न रहे जिसके फलस्वरूप भारत में ललित कलाएँ समाज में सम्मानित हो सकीं।[5] भारतीय ललित कलाओं का इतिहास बहुत प्राचीन और रोचक है। इन कलाओं के अन्तर्गत साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्र, मूर्ति और वास्तु आते हैं। भारतीय जीवन दर्शन में यह भाव सर्वसम्मति से ग्राह्य हुआ कि जीवन में सत्य, शिव और सौन्दर्य निहित है और इनका समन्वय भी आवश्यक है। अतः समस्त ललित कलाओं में नैतिकता और [illegible] का समन्वय है।[6]

भारतीय कला की मूल प्रेरणा धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों में समाहित रही। भारतीय चित्रकार, संगीतकार और शिल्पकार अपनी मूल्यपरक अभिव्यक्ति से हमारी चेतना को अपने बोध की ऊँचाई तक ले जाने में

*एसो. प्रोफेसर, चित्रकला, [illegible] कॉलेज, [illegible]

शरणार्थी तथा उनकी समस्यायें

हमने जब कलि-ए-गुलशन में कदम रखा था।
हम तक बात-ए-वतन आई थी समझाने को।।

[illegible]

[illegible] अतः शरणार्थियों के संदर्भ में 1951 का 'शरणार्थी अभिसमय' तथा 1967 में स्वीकृत इस अभिसमय का प्रोटोकॉल उल्लेखनीय है। अभिसमय के अनुसार, "शरणार्थी वह व्यक्ति है जो अपनी प्रजाति, राष्ट्रीयता, किसी विशेष सामाजिक समूह की सदस्यता तथा अपने राजनीतिक दृष्टिकोण के कारण अपने देश में पीड़ित होने से भयभीत है तथा अपनी सुरक्षा करने में असमर्थ है। इसी कारण दूसरे देश में चला जाता है।"

[illegible]

संक्षिप्त इतिहास एवं वर्तमान शरणार्थी समस्या:

[illegible]

[illegible] की शरण दी है। भारत में इस समय श्रीलंका और तिब्बत के नागरिकों को सबसे अधिक शरण दे [illegible] हैं अभी कहीं पूरी करने के बाद शरणार्थियों को [illegible] दिया जाता है। [illegible] भारत ने न तो 1951 के 'रिफ्यूजी कन्वेंशन' पर [illegible]
1967 के प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर [illegible] थे।"

1979 में USSR द्वारा अफगानिस्तान में [illegible] पर जबरदस्त गृहयुद्ध छिड़ गया, जिसके कारण [illegible] अफगानियों ने पाकिस्तान में शरण ली। 1971 से 1980 के दौरान [illegible] में म्यांमार के [illegible] मुस्लिम शरणार्थियों [illegible] 90 हजार नेपाली मूल के [illegible] को भूटान से विस्थापित [illegible] [illegible] वाली घटना है।"

United Nations High Commission For Refugees (UNSCR) के आँकड़ों के अनुसार 2014 के [illegible] दुनिया में लगभग 6 करोड़ लोग ऐसे थे, जो संघर्ष, युद्ध या जुल्मों के चलते विस्थापित हुए थे। [illegible] [illegible] के गृहयुद्ध के कारण [illegible] है। वैसे तो मध्यपूर्व के सभी [illegible] देशों [illegible] शरणार्थियों का पलायन होता रहा है, किन्तु सीरिया की स्थिति अधिक विकट है।

वर्तमान सीरिया संकट:-

सीरिया का इतिहास पुराना है। 10 हजार ईसा पूर्व यह देश नवपाषाण कालीन सभ्यताओं का [illegible] में प्राचीनतम सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं। [illegible] की सभ्यता को सीरिया [illegible] [illegible] काल में इस देश को [illegible] कहा जाता था। वर्ष 1936 में सीरिया, फ्रांस की औपनिवेशिक [illegible] हुआ। [illegible] अरब [illegible] देश के पहले राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। [illegible] के बाद सोशलिस्ट 'बाथ पार्टी' का शासन सीरिया में प्रारंभ हुआ, जो आज भी सत्तारूढ़ है। [illegible] [illegible] जैसे आतंकी समूह के अस्तित्व में आने से लाखों सीरियाई नागरिकों [illegible] [illegible], जिसने यूरोप में 'शरणार्थी संकट' उत्पन्न कर दिया।"

इस शरणार्थी समस्या के कारण यूरोपीय देशों की सामाजिक- आर्थिक स्थितियों पर प्रभाव पड़ रहा है। [illegible] [illegible] हो गया है। UN के अनुसार यहाँ की पूरी युवा पीढ़ी विनाश के कगार पर पहुँच चुकी है।" 2011 [illegible] से 2015 तक लगभग 40 लाख से भी ज्यादा सीरियाई लोग देश छोड़कर जा चुके हैं। 65 लाख [illegible] [illegible] हैं। जॉर्डन, तुर्की और लेबनान जैसे देशों में लोग पैदल ही पहुँच चुके हैं।" हालात इतने विकट हैं कि [illegible] [illegible] सरकारी [illegible] में महिलाएँ [illegible] कर रही हैं। इस शहर को [illegible] से सरकारी [illegible] [illegible] है। इन महिलाओं को डर रहा है कि अगर सरकारी [illegible] ने जायदानी को अपने कब्जे में कर लिया [illegible] होगा। इसलिए सैकड़ों महिलाओं ने संघर्ष किया, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ और पत्रकारों को [illegible] के [illegible] [illegible] किया, इस डॉक्टर से [illegible] कि अगर शहर पर कब्जा कर लिया जाता है, तो उनकी हत्या या [illegible] [illegible] भी हो सकता है। सीरिया पर [illegible] लिखने वाले [illegible] एशिया विश्लेषक [illegible] [illegible] कहते हैं, "मैं कभी भी [illegible] नहीं हुआ था।" जिनेवा स्थित International Displacement Monitoring Centre (IDMC) के मुताबिक - [illegible], सीरिया, अंगोला, इराक, सूडान जैसे देशों में [illegible] [illegible] के चलते आज दुनिया भर में 3.8 करोड़ से ज्यादा लोगों को अपने ही देशों से बाहर होना पड़ा है। [illegible] [illegible] कहते हैं- "जबरन अपने ही घर से बाहर किए जाने से [illegible] [illegible] की सुरक्षा में दुनिया और विशेषकर UN जैसी वैश्विक संस्थाओं की [illegible] का बुरा नतीजा है।"

शरणार्थियों के प्रति अन्य देशों का व्यवहार:-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह विश्व का सबसे भीषण संकट माना जा रहा है। [illegible] [illegible] Organization For Migration के अनुसार जनवरी से अगस्त 2015 के बीच यूरोपीय देशों की [illegible] [illegible] ज्यादा शरणार्थियों की [illegible] की गई। [illegible] यूरोपीय संघ के 28 देश [illegible] हुए हैं।"

प्रारम्भ में तो यूरोपीय देश शरणार्थियों को अपने देश में प्रवेश को लेकर बहुत [illegible] अपना रहे थे, किन्तु अब [illegible] [illegible] मुद्र [illegible] के शरणार्थियों को शरण देने को तैयार हुए। किन्तु समस्या यह है कि कुछ यूरोपीय देश स्वयं आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं, और [illegible] यह भी है कि [illegible] शरणार्थियों का बोझ ये कैसे उठाएँ? [illegible] इस सम्बन्ध में विभिन्न देशों की विभिन्न राय है। हालांकि शरणार्थियों के प्रति [illegible] है।

यूरोपीय संघ का सबसे बड़ा [illegible] देश जर्मनी शरणार्थियों के पक्ष में खड़ा है। जर्मनी व फ्रांस ने एलान कर दिया कि अब शरणार्थियों के लिए यूरोपीय देशों का कोटा तय होगा और मौजूदा नियमों में ढील दी जायेगी। [illegible] और [illegible] के [illegible] होने के कारण शरणार्थियों को [illegible] [illegible] पड़ रहा है।" कुछ देश इस समस्या के [illegible] प्रभावों को लेकर भी चिंतित हैं। जैसे कि- [illegible] के प्रधानमंत्री [illegible] ने कहा कि- "ये मुस्लिम शरणार्थी ईसाई समुदाय के लिए खतरा है।" [illegible] में ब्रिटेन में शरणार्थियों के [illegible] [illegible] लेकिन अब [illegible] है। [illegible] के शरणार्थियों को लेने में असमर्थता व्यक्त की है। [illegible] [illegible] शरणार्थियों के आने से [illegible] पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। ईरान के राष्ट्रपति [illegible] ने कहा है कि मध्यपूर्व के शरणार्थियों को शरण देना यूरोप की ऐतिहासिक तथा मानवीय जिम्मेदारी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थियों की देखभाल के लिए बनायी गई शीर्ष संस्था UNHCR वर्तमान में 125 देशों में 22.4 मिलियन शरणार्थियों की देखभाल कर रही है। इस संस्था का मुख्य वित्तीय स्रोत सदस्य देशों द्वारा किया गया [illegible] है। वर्तमान में यह संस्था भी वित्तीय साधनों की भारी कमी का सामना कर रही है।" विश्व खाद्य कार्यक्रम [illegible] में 2.29 लाख शरणार्थियों के राशन में कटौती को मजबूर हुआ क्योंकि उसके पास भी धन की कमी पड़ गई।"

शरणार्थियों की समस्याएँ:-

[illegible] इस सम्बन्ध में विश्व के देशों की इस [illegible] की स्थिति में हजारों शरणार्थी समुद्र की लहरों में समाते जा रहे हैं। हजारों भूखे-प्यासे, [illegible] और दूसरी [illegible] में जाने [illegible] रहे हैं। लाखों विभिन्न देशों की सीमाओं पर [illegible], इधर-उधर भटकने को मजबूर हैं। इन लोगों का दूसरे देशों में गैर कानूनी तरीके से दाखिल होना सुरक्षित नहीं है। ऐसे में मानव तस्करी गिरोह भी सक्रिय है। जो गैर कानूनी तरीके से लोगों को दूसरे देशों में पहुँचाने के लिए लाखों रुपए लेकर सौदा कर रहे हैं।" [illegible] के अभाव में समुद्री मार्ग जोखिम भरे हैं, लेकिन जीवन की आस लिए ये [illegible] लोग फिर भी प्राण संकट में डालकर समुद्र पार कर रहे हैं और इस कारण जनवरी 2015 से अगस्त 2015 के मध्य 2500 शरणार्थी समुद्री [illegible] में ही अपनी जानें गँवा चुके

[illegible] संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों का कहना है कि [illegible] European Criminal Intelligence Agency के अनुसार [illegible] 1 हजार बच्चे स्वीडन में गुमशुदा हुए। [illegible] 10 फीसदी बच्चे जर्मनी, 10 फीसदी बच्चे [illegible]

निष्कर्ष:

[illegible] कहा जा सकता है कि मनुष्य अपना घर-परिवार छोड़कर दूसरे देशों में शरण [illegible] का पालन करते हों या दूसरी संस्कृति में विश्वास करते [illegible] भविष्य अनिश्चित है। [illegible] जहाँ शरणार्थियों का सैलाब [illegible] यह तो सत्य समस्या है- शरणार्थियों के लिए [illegible] सदैव ही बोझ बने रहे ऐसा सत्य नहीं है। [illegible] को अलग-अलग करके फिर से संजोया। जीवन के [illegible] देश के प्रधानमंत्री भी बने। इसी प्रकार ब्रिटेन [illegible] इसके पश्चात यूरोप समृद्ध होता गया। [illegible] ये शरणार्थी- मेहनती, अनुशासित तथा [illegible]

[illegible] तथा सम्वेदना के आधार पर विचार कर समाधान [illegible] इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव निम्नवत् है-

- [illegible] संस्था को निर्णय लेने व कार्यवाही करने हेतु [illegible]
- [illegible] जिनसे देश के नागरिकों को पलायन हेतु विवश होना [illegible] उपाय अपनाने चाहिए।
- [illegible] की सुरक्षा तथा समुचित धन उपलब्ध कराना चाहिए। [illegible] की ठीक प्रकार से देखभाल न कर सकें।
- [illegible] रहते हुए सभी नियमों कानूनों का समुचित पालन करना [illegible] में योगदान देना चाहिए।
- '[illegible]' के सिद्धान्त को जीवन का आधार बनाना चाहिए।

सन्दर्भ:

1. [illegible] 2015
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible] 2015
6. [illegible] 2015 [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible] 2006 [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible] 2011, पृष्ठ-43
12. [illegible] 2015 [illegible]
13. [illegible] 2015
14. [illegible]
15. [illegible] 2015
16. [illegible] 2016 [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible] 2015
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
22. [illegible]
23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible]
26. [illegible] 2014 [illegible]
27. [illegible] 2015
28. [illegible]

वर्तमान समय में स्वच्छता की प्रासंगिकता

[illegible]

[illegible] ''स्वच्छता आजादी से महत्वपूर्ण है।'' [illegible]

[illegible]

[illegible]

सारिणी - परिवार में उपलब्ध सुविधाएँ

क्षेत्र	उपलब्ध सुविधाएँ		
	पेयजल	शौचालय	कूड़ा निस्तारण व्यवस्था
ग्रामीण	46.7 %	59.4 %	32.0 %
शहरीय	76.8 %	8.4 %	70.8 %

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 59.4 % परिवारों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भ :

1. [illegible]
2. [illegible] 3. [illegible] 4. www [illegible] wikipedia [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible], 2015, पृष्ठ संख्या – 38
5. [illegible] 2015, पृष्ठ संख्या – 38
6. [illegible] 2015, पृष्ठ संख्या – 39

Aparājita [illegible]
Vol. 2 Jan.-Dec. 2016
ISSN 2454-[illegible]

हिन्दी साहित्य की दार्शनिक परम्परा और प्रसाद

डा० [illegible]*

साहित्य मानव के भावों और विचारों का कोष है। [illegible]

'दर्शन' का अर्थ किसी वस्तु का सूक्ष्म ज्ञान अथवा 'चिन्तन द्वारा प्राप्त ज्ञान' हो सकता है। [illegible]

जयशंकर प्रसाद का कृतित्व हिन्दी-वाङ्मय की अमूल्य निधि है। भावना, विचार, अलंकार, छन्द विधान, [illegible] सभी दृष्टियों से उनका साहित्य बेजोड़ है। [illegible]

दर्शन अपनी चिन्तनपरक व्यापकता के कारण साहित्य से एकात्म्य स्थापित कर लेता है। [illegible]

* प्रवक्ता, हिन्दी, [illegible]

[illegible] दार्शनिक अपने मन में उन्हीं बातों [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] 'आँसू', 'लहर', 'कामायनी' में [illegible]

[illegible] सौन्दर्य-बोध के प्रसंग में [illegible]

से उद्धरण देकर मूर्त और अमूर्त, मर्त्य और अमृत दोनों को [illegible] [illegible] आदि के प्रसंगों में उपनिषदों के उद्धरण देकर [illegible] की है।

"ले चल वहाँ भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे। जिस निर्जन में सागर लहरी, अम्बर के कानों में गहरी निश्छल प्रेम-कथा कहती हो तज कोलाहल की अवनी रे।"

[illegible] प्रसाद-साहित्य में [illegible] "कौन तुम मेरे हृदय में" - महादेवी वर्मा। "अहे सुख-दुःख के सहचर मौन। नहीं कह सकती तुम हो कौन।" - सुमित्रानंदन पंत।

प्रत्येक महान साहित्यकार दार्शनिक होता है और प्रत्येक महान् दार्शनिक साहित्यकार। रवीन्द्र, कबीर, जायसी, तुलसी, आदि महान् कवि साहित्यकार ही नहीं, महान् दार्शनिक भी हैं। उनके साहित्य में जितनी भाव प्रवणता है, चिन्तन उससे कहीं अधिक है। कबीर के इस दोहे में मुक्ति की स्थिति में बिन्दु तथा सिन्धु की भाँति एकाकार हो जाता है-

"बूँद समानी समुंद में, सो कत हेरया जाय। समुंद समाना बूँद में, सो कत हेरया जाय"।।

[illegible]

प्रसाद-साहित्य पर बौद्धमत का व्यापक प्रभाव पड़ा। 'अजातशत्रु' नाटक इसी प्रभाव के अन्तर्गत लिखा गया है। 'राज्यश्री' तथा 'विशाख' में भी इसकी अभिव्यक्ति हुई है। [illegible]

[illegible] के लिए [illegible] की प्रिय [illegible]

[illegible] देते हैं। [illegible] को [illegible] कर्तव्य [illegible] है। [illegible] में प्रसाद जी की [illegible] है। [illegible] कृष्ण, [illegible] [illegible] हैं। 'गीता' की [illegible] देते हैं। [illegible] वे लोक [illegible] कर्तव्य [illegible] है तथा [illegible] और [illegible] [illegible] की [illegible] देते हैं। [illegible] तथा दूसरों को 'पंचम-परिवार' कहते हैं और [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] भावों का [illegible] [illegible] [illegible] जो [illegible] है वही श्रेय है। यहीं [illegible] के [illegible] [illegible] है। [illegible] विवेचन में जो [illegible] [illegible] [illegible] दार्शनिकता और जयशंकर प्रसाद का [illegible] [illegible] में [illegible] हुआ।

[illegible] विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य की [illegible] प्रसाद तथा हिन्दी साहित्य के अध्ययन से [illegible] है। [illegible] [illegible] के अध्ययन से नहीं। प्रसाद जी के सम्बन्ध में यह [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] नवीन चिन्तन शैली दी। इसका प्रमाण है कि [illegible] [illegible] नवीन [illegible] शैली के [illegible] है और उनका [illegible] अनुभव सिद्ध है। [illegible] [illegible] है। [illegible] और [illegible] में भी उन्होंने उसी का समर्थन किया। [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] में हुके, पर अन्ततः मन वहाँ नहीं रमा और [illegible] [illegible] 'महाकरुणा' [illegible] लगी, वे उसे साथ ले आये और [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] इनकी इस दिशा में मौलिकता है। [illegible] इस प्रकार [illegible] गीता की प्रमुख शिक्षा व्यावहारिक है। 'कर्मयोग' का [illegible] [illegible] अपने को [illegible] पर [illegible] रखा। नियतिवादी होते हुए भी [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] परिणाम है। उन्होंने शैवमत का गम्भीर [illegible] [illegible] [illegible] बौद्धिक [illegible] [illegible] को अपने काव्य में स्थान दिया।

[illegible] तथा आनन्दवाद की परम्परा को अपने काव्य में स्थान दिया।

प्रसाद जी [illegible] में एक [illegible] विचारक होने के साथ-साथ व्यवहारवादी तथा समन्वयवादी भी थे। [illegible] [illegible] दार्शनिक [illegible] को [illegible] [illegible] की है। उनकी दृष्टि समष्टि की ओर थी; वे [illegible] [illegible] [illegible] करना वे अपनी साहित्य-साधना का एक [illegible] [illegible] दार्शनिक सिद्धान्तों को सामाजिक [illegible] [illegible] की सिद्धि में पूरी-पूरी सफलता प्राप्त हुई है। [illegible] [illegible] इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने अपने [illegible] [illegible] का प्रभूत उपकार किया है। वे हिन्दी साहित्य के [illegible] [illegible] ने अपने [illegible] जीवन-संदेशों से मानवता का प्रभूत उपकार किया है। वे हिन्दी साहित्य के [illegible]

है और विश्व-साहित्य में भी गौरवपूर्ण स्थिति है।

[illegible] दुःख-सुख [illegible] का सत्य, [illegible] का मधुमय दान।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुक्त-[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

-कामायनी, [illegible]

संदर्भ -

1. [illegible] पृ०सं० -43
2. [illegible] - पृ०सं० 25
3. वही, पृ०सं० 31
4. [illegible] - पृ०सं० 32
5. [illegible] पृ०सं० 28।
6. [illegible] 4.5.6।
7. [illegible] - कामायनी, पृ०सं० 287-89।
8. [illegible] पृ०सं० 38।

9. [illegible] पृ०सं० 38।
10. [illegible] पृ०सं० -37।
11. [illegible] पृ०सं० -32।
12. [illegible] पृ०सं० -236 -286।
13. [illegible] पृ०सं० -50।
14. [illegible] पृ०सं० 182।
15. [illegible] पृ०सं० -292।
16. [illegible] पृ०सं० -52।
17. [illegible] पृ०सं० -34।
18. [illegible] पृ०सं० -34।
19. वही पृ०सं० -34-35।
20. वही पृ०सं० 36।
21. वही पृ०सं० -37।
22. वही पृ०सं० -52।
23. वही पृ०सं० -57।
24. वही पृ०सं० -55-56।
25. वही पृ०सं० -64।
26. [illegible] पृ०सं० - 138-139।
27. वही पृ०सं० 136।
28. [illegible] पृ०सं० -20।
29. [illegible] पृ०सं० -12।
30. [illegible] पृ०सं० -22।
31. वही पृ०सं० 23।
32. [illegible] पृ०सं० 52।
33. वही पृ०सं० -51।
34. [illegible] पृ०सं० -25।
35. [illegible] पृ०सं० -13,14।
36. [illegible] पृ०सं० 154।
37. [illegible] पृ०सं० 57।
38. [illegible] पृ०सं० 12,15।
39. [illegible] [illegible] [illegible]।
40. [illegible] [illegible] [illegible]।
41. गीता -4/6 व 11।

मजहब के आवरण में मुस्लिम महिलाएं

[illegible]

और मजहबी रहनुमा दोनों बराबर जिम्मेदार हैं। [illegible] मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक, हलाला, बहुपत्नीत्व, कम उम्र में शादी जैसी कठिन समस्याओं को झेल रही हैं, जबकि यह सभी कुप्रथाएं कुरान की रोशनी में सही नहीं हैं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अतः मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति अच्छी करने के लिए [illegible] महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जा सके।

सन्दर्भ-

1. [illegible], 2002, पृ.सं.-45
2. [illegible], 2012, पृ.सं.-[illegible]
3. [illegible], 16 [illegible] 2016
4. [illegible], 1968, पृ.सं.-27
5. वही पृ.सं.-27
6. [illegible]
7. [illegible] 2016 8. [illegible] 9. [illegible] 2014 पृ.सं.-[illegible]
10. [illegible]

अच्छा अभिशासन: एक बहुआयामी अवधारणा

अच्छा प्रशासन: भारत में किये गये कुछ प्रयास

भारत में गरीबी की समस्या : नई सोच की आवश्यकता

[illegible]

गरीब एवं गरीबी रेखा क्या है?

[illegible]

निर्धनता का आंकलन : आँकड़ों की बाजीगरी - [illegible]

- योजना आयोग द्वारा निर्धनता रेखा निर्धारण हेतु गठित कार्यकारी समूह (1962) - डॉ. डी. आर. गाडगिल, डॉ. बी. एन. गांगुली, डॉ. पी. एस. लोकनाथन, अशोक मेहता, पीताम्बर पंत, डॉ. के. आर. वी. राव, श्रीमननारायण।

- [illegible] विशेषज्ञ समूह 1993 - अध्यक्ष प्रो. डी. टी. लकड़ावाला [illegible]
- [illegible] विशेषज्ञ समूह 2009 - प्रो. सुरेश डी. तेंदुलकर (अध्यक्ष), [illegible]
- [illegible] विशेषज्ञ समूह 2014 - डा. सी. रंगराजन (अध्यक्ष), [illegible]
- [illegible]

[illegible] योजना आयोग की पूर्व [illegible] 2011 [illegible] जिससे [illegible] अधिक [illegible] ₹ 26 [illegible] ₹ 32 [illegible] योजनाओं के अन्तर्गत लाभ [illegible] विशेषज्ञ समूह [illegible] विशेषज्ञ समूह द्वारा [illegible]

तालिका-1

विशेषज्ञ समूह	वर्ष	[illegible] (प्रतिशत में)		प्रति व्यक्ति औसत मासिक उपभोग व्यय (रुपयों में)		अखिल भारतीय निर्धनता रेखा (पाँच व्यक्तियों के परिवार का औसत मासिक उपभोग व्यय) (रुपयों में)	
		ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय
रंगराजन	2011-12	[illegible]	[illegible]	972	1407	4760	7035
[illegible]	2009-10	[illegible]	[illegible]	801	1198	4005	5990
तेंदुलकर	2011-12	[illegible]	[illegible]	816	1000	4080	5000
[illegible]	2009-10	[illegible]	[illegible]	673	860	3365	[illegible]

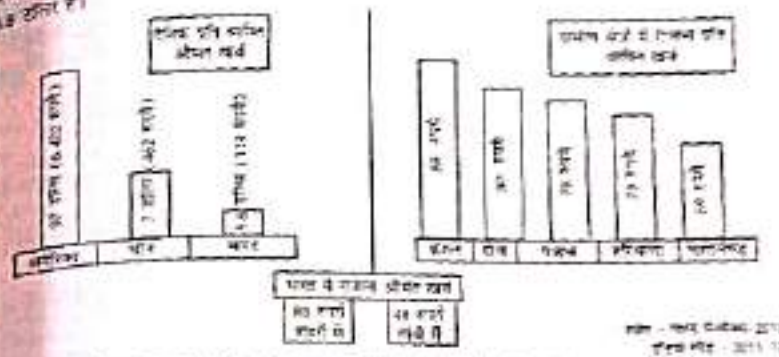

[illegible] विशेषज्ञ समूह [illegible] वर्ष 2009-10 से 2011-12 के बीच [illegible] 42.4 [illegible] 44.9 [illegible]

औसत भारतीय का रोजाना खर्च

[illegible] भारत में [illegible]

हमारे देश के ग्रामीण इलाकों में [illegible] 1198 रुपये खर्च करते हैं, [illegible]

गरीबी : कारण और निवारण के उपाय- हमारे देश में आर्थिक असमानता की बढ़ती [illegible] आर्थिक असमानता [illegible] आर्थिक असमानता बढ़ी है, उसमें मानव मूल्यों के [illegible]

देश की कुल आबादी में 21.5 करोड़ व्यक्ति ऐसे हैं जिनके पास कोई सम्पत्ति नहीं है। यह आँकड़ा 2011 की [illegible] देश के सबसे 50 [illegible] के पास कुल 270.31 [illegible] डॉलर की सम्पत्ति है और इसमें 15 से 25 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि हो रही है। देश में जिस तेजी से [illegible] की संख्या

[illegible]

Agrayika [illegible]

Representation of the Subaltern Migrant in Indian Fiction

Dr. Jaiwanti Dimri*

The large scale migration of people across the national and international borders has been a problem of global magnitude in political, economic, ethnic and social terms for many countries in Asia and Europe, India being one of them. Migration of people in Salman Rushdie's terms has created new types of dislocated people across the globe who tend to define themselves by their 'difference' ... who root themselves in ideas rather than places, in memories as much as in ideas destined to experience and inhabit a state of 'inbetweenness' and 'hyphenated/liminal' spaces (Homi Bhabha). Migration of people has created new types of dislocated people not only across the globe but within the defined boundaries of a nation too wherein the hegemonic signifiers of diasporic hybridity, inbetweenness, displacement, location-dislocation-relocation, hybridization, culture shock and identity crisis etc. are compatible with the internal diaspora. A migrant in Delhi would share the same diasporic mindset with his/her counterpart in Boston or Moscow. Thus, any transition from a settled way of life to a national or transnational drift is not easy and is bound to generate a sense of homelessness.

There have been two kinds of migrations in India - the intra-country rural migrations to the cities and secondly the cross-border migrations for personal as well as political reasons. This paper would also engage with another serious though less publicized dimension of the migration of the subaltern population to the urban and metropolitan centres in India in the recent past. A sizable majority of this migrant labour population consists of rural and cross-border migrant women working as domestic helps or labourers at construction sites and subjected to a similar diasporic syndrome. Their invisibility in the dominant literary discourse is foregrounded not only on the theories of inclusion and exclusion, private and public domain, domination and subordination but most significantly on the dynamics of canon formation. The legitimization of some of the fictional texts in English in the form of rewards, cinematic adaptations needs to be examined in the backdrop of the notions of subalternity I and hegemony. A paradigmatic shift towards the metropolitan site is evidenced in the dominant Indian fictional canon with a distinct focus on the 'new migrant subaltern subjectivities.' Vikas Swarup's *Q & A* (2005), Arvind Adiga's *The White Tiger* (2008) and Kamala Markandaya's posthumous novel *The Bombay Tiger* (2008), for instance, published between 2005-2008 mark a distinct shift from the earlier metropolitan discourse that had failed to attract the 'western gaze' despite the latter's focus on the under privileged, disadvantaged social group.

This paper is divided into two sections. The first section briefly revisits the tradition of social realism in the Indian literary canon best formulated by the Hindi writer Premchand in the inaugural session of All India Progressive Writers' Association (AIPWA) in 1936 as a body of socially purposeful writing committed to generate "*Gati, sangharsh aur bechaini*" — dynamism,

*Professor and Chairperson (Retd.) Dept. of English and a former fellow of Indian Institute of Advanced Study Shimla, H.P. University Shimla. She is a bilingual writer, poet & translator and was visiting Prof. at [illegible] universities [illegible] Nigeria and Bhutan [illegible]

[illegible] to situate this discourse within a historic framework. The [illegible] writers of the first generation Indian English writers, Raja Rao, Bhabani Bhattacharya, Mulk Raj [illegible] and R.K. Narayan are located in the [illegible] social realism in the pre-independence [illegible]. The pre-independence [illegible] discourse too could initially be placed [illegible] historical framework [illegible] social [illegible]. The second section of this paper [illegible] [illegible] migrants in the dominant and the feminist literary canons [illegible] of [illegible] *A Life Less Ordinary* by Baby Halder originally written in Hindi as *Aalo Aandhari* [illegible] Swarup's *Q & A* [illegible] adapted into 'globally acclaimed' 'Slumdog Millionaire' [illegible] [illegible] of the subaltern centric dominant discourse to bring these [illegible] [illegible] vis-a-vis the twofold paradigms of representation, subaltern [illegible] and Foucauldian reciprocality.

(I)

The rural migration to the urban centres in India is not a new phenomenon. The city [illegible] colonization dates back to the colonial period with the establishment of the three presidency towns of Bombay, Calcutta and Madras in 1785 under the provisions of Pitt's India Act. [illegible] of the colonial world into two quarters -- the native quarters [illegible] [illegible] -- the native zone and the settlers' zone was in line [illegible] the European quarters of the [illegible] principle of pure reciprocal exclusivity (Fanon 29-32) [illegible] pure knowledge [illegible] literary canon is formulated by Tabish Khair as "the socio-economic [illegible] [illegible] between Coolie (subaltern) and Babu classes. The 'Babu' [illegible] [illegible] urban, (at times cosmopolitan), Brahminized and/or 'westernized' [illegible] [illegible] non-English speaking, not or less Brahminized [illegible] [illegible] culturally marginalized and, often rural or migrant-urban populations" (Khair, [illegible])

Some iconic fictional representations of the 'vulnerable rural migrant to the city' are available [illegible] the protagonists of Vibhutibhushan Bandyopadhyaya's *Pather Panchali* (1929), Premchand [illegible] [illegible] Mulk Raj Anand's *Coolie* (1936) and Rabindranath Tagore's short story "Chhuti" [illegible] "Home Coming" in *The Hungry Stone and other Stories*, 1916) reiterative of the [illegible] of the under-privileged children. As early as in [illegible] the colonial state to protect the rights and interests [illegible] poignantly penned down the diasporic sensibility of a child [illegible] Vibhutibhushan Bandyopadhyaya [illegible] by Satyajit Ray in the Apu trilogy with equal [illegible] and precision [illegible] and displaced children in these novels and stories reflect [illegible] The portrayal of the orphaned, [illegible] and displaced children in these novels and stories [illegible] the vulnerability of the dislocated migrant child in an alien surrounding. The polemics of the [illegible] of the simple villager by the urban [illegible] is investigated by Premchand and Sharat Chandra and later by R. K. Narayan. Most importantly, the focus in this pre-independent colonial discourse is on the [illegible] location of the migrant subject. The invisibility of the female migrant in these texts is plausible since the rural migrants moved to the cities at this stage without their families, and in most cases [illegible] practice is still not defunct.

Unlike the [illegible] and dislocated prototypes in the colonial state, the 'neo migrant subaltern' in the English literary canon is shifted from a disempowered centre to an empowered one by [illegible] of [illegible]. The transformation of this 'neo subaltern migrant' from a helpless village [illegible] into a conniving and manipulative agent of violence conflating with the Foucauldian power/knowledge paradigm is problematic that posits the need to read these texts against the grain. Gayatri Spivak too [illegible] that the 'subaltern' must be rethought today (Spivak 2006: [illegible]). Unlike the past, the city space is no longer a dreadful site but a potential source of independence and liberation for this new breed of young migrants from the under privileged section and cross sections of society. In the toppling of the normative Hegelian master/slave model by the Foucauldian top to bottom power model, the power/knowledge paradigm predominantly plays a pivotal role in most of these texts. Be it the world of the rural migrant in Delhi (*The White Tiger*), the juvenile home (*Q & A*), the corporate world (*The Bombay Tiger*), power is appropriated by those who can decipher and decode the dynamics of power. The rise of the subaltern migrants from the bottom to top signifies that power is a strategy, maneuver, tactic, technique and functioning.

To a common reader these novels creating new empowered subaltern heroes and urban myths of success celebratory of the migrants' city experience read as fairy tale accounts. The rags to riches march of such 'lesser children of God' offers a rejuvenating experience. A participatory reader would invariably "be moved to the point of indignation by the marginalized location of the migrant in the nation state to be ultimately rejuvenated by the relocation of these dislocated marginalized subjectivities to the centre of power offering the desired catharsis. Aristotelian emotional 'relief'. However, given the dynamics of the context, sub-text and intertextuality of a text, these texts need to be examined critically.

(II)

To begin with the firsthand lived experience of Baby Halder in *A Life Less Ordinary* (2002, 2006) this is the first person narrative of a twenty nine years old domestic help, Baby Halder. Originally written in Hindi as *Aalo Aandhari* the novel could literally be translated as 'from Darkness to Light.' The genre of autobiography has been the most preferable medium of creative self expression for the women of disadvantaged social groups of the widows, courtesans, film actresses and women of deprived caste. Born somewhere in Jammu and Kashmir, moving on from one place to another first with her parental family and later as a child bride until she took the final leap to Delhi, the capital of the country on her own, this topographical trajectory of the writer-protagonist best qualifies the diasporic syndrome in terms of dislocation-location-relocation. First as a child and then as a child-woman, shuttling from one shelter to another, the mindscape of the female protagonist was bound to inhabit a trishanku like existence - what Homi Bhabha has theorized as 'inbetweenness' and hyphenated/interstitial spaces.

Aptly titled in English as *A Life Less Ordinary*, the events and the woman-centric issues that surface in this novel are not extraordinary, still located in the pre-independence reform movement of the nineteenth century in terms of child marriage, Age of Consent and women's agency that would situate the novel in the private domain of domesticity reminiscent of Ashapurna Devi's novels, a writer most admired by Baby Halder. *A Life Less Ordinary* is a recollection of an ordinary woman's journey from her homeland in Bengal to Delhi not for any adventure but simply in search of a better future for her children. Undaunted, with a stoic determination she embarks on this journey with three small children since the familial or social agency was in no way less alien and hostile. Married at the age of thirteen and a mother at the age of fourteen this life was without childhood by her own admission. '*Mera bachpan bahut thora tha*'-- The span of my childhood was not much.' (Interview, Delhi Doordarshan , July 25, A 2015)

What renders an extraordinary quality to an ordinary text – a memoir, penned [illegible] [illegible] domestic help to earn the qualification of 'one of the best subaltern [illegible] by the noted Indian writer & [illegible] translated into 25 languages so far [illegible] [illegible] of the subaltern female experience, and secondly the [illegible] representation of that experience in such a way [illegible] [illegible] distancing from the text which is the prime [illegible] the text and [illegible] interspersed with stories and sub stories within the text, the [illegible] [illegible] tradition in the form of *kathas*, *upkathas* and *parikathas* i.e. [illegible] [illegible] locating the text in the domain of folklore. What [illegible] [illegible] woman to maintain equanimity and courage in the face of [illegible] [illegible] the pre and post marital phase is most prominently her cultural [illegible] [illegible] Unlike her mother she is not an escapist, but a rebel in her own [illegible] As a woman she might [illegible] but as a mother she excels.

The [illegible] metropolitan discourse has created new urban myths and stereotypes. The [illegible] is employed by the migrant agent in the dominant discourse. Balram Halwai in *The White [illegible]* for instance is urban success in terms of money and power at the cost of the conventional [illegible] cultural [illegible] and value system. *A Life less Ordinary* too is a success story mapping out the journey [illegible] the disempowered female protagonist from the realm of darkness to light but as a [illegible] of [illegible] the modes of acceptance and resistance are located within the conventional familial and social [illegible] [illegible] to the norm. Neither any short cuts are to be adopted nor easy compromises [illegible] [illegible] for despite [illegible] and challenges. This is what Dipesh Chakraborty has conceptualised [illegible] [illegible] culture of resistance to and acceptance of domination and hierarchy. (Chakraborty [illegible]) Hence the authenticity of the narrative remains intact. That a single penniless woman with [illegible] children could survive in the metropolis with grace and dignity is a positive urban myth [illegible] [illegible] of female exploitation.

The [illegible] of a semi literate domestic help into a writer qualifies *A Life [illegible] Ordinary* as a [illegible] feminist text leading Baby Halder in Elaine Showalter's terms into "[illegible] of self-discovery, a turning inward, freed from some of the dependency of opposition, a search [illegible] identity." (Showalter 120) and attaining agency in Helen Cixous's *e-criture* domain. The [illegible] narrative [illegible] as a questioning subject offers a fine model of native tradition that allows [illegible] [illegible] in the form of subject position and sub narratives. As Spivak has argued [illegible] question of 'speaking as' involves a distancing from oneself and this distancing position is [illegible] Baby Halder with a sudden shift from the first person to the third person 'Baby' or 'poor Baby' [illegible] [illegible]. Despite the intervention of the supportive agency of Prabodh Kumar, her [illegible] the defining variables of identity and credibility are not violated in the novel. Her benevolent [illegible] [illegible] of Ramkrishna Paramhansa – the great Indian ascetic by Baby Halder [illegible] a spiritual dimension to the subaltern benevolence. Halder's admission to be reading Taslima Nasreen's *My Girlhood Days* which 'read like my own story' (interview, Doordarshan) [illegible] every night in her starry-eyed admiration for Ashapurna Devi who used to write at night after finishing her domestic chores are contributing factors in the transformation of a domestic help into a writer.

Baby Halder provides a fascinating none the less disturbing insight into an unfamiliar side of the [illegible] section of Indian society. The working class power of the female workers in the public space cannot be glossed over though their upward mobility [illegible] is restricted by the subversive patriarchal operations in the private space.

Prior to any discussion on Vikas Swarup's *Q & A*, a brief discussion on the notion of hegemony is imperative for locating this novel in a proper context. Hegemony [illegible] Gramsci is a concept which attempts to explain the complex nature of authority [illegible] according to Antonio coercive and dependent on the consent of those who are [illegible] into submission. [illegible] society or the realm of state power and authority [illegible] The practical [illegible] of beliefs and attitudes in civil society [illegible] as well as [illegible] hegemony [illegible] but can also depend on [illegible] the 'spontaneous consent' arising from the masses of the people; consent carried by systems and structures of beliefs, values, norms and practices of everyday life which unconsciously legitimate the order of things.

Q & A in simple terms is the rags to riches story of a teenager waiter from Mumbai whose incredible win in a quiz show lands him in prison. More than a picaresque tale of an orphan boy, the narrative encapsulates the top level institutionalized structure of the Indian civil society ranging from education, religion and prison to the bottom social hierarchy of [illegible] [illegible] extortionists, the dons, the big business house and the police, the instruments of [illegible] power – "Who can police the police?" (*Q & A* 25) More than a simple story of a quiz show, the novel is an exploratory tale of the various ways knowledge can be acquired by those denied access to institutionalized sources of knowledge in the form of formal education. We need to scrutinize the ways [this] novel negotiates with the readers, offering now and then, some concessions to the underprivileged, who are at the end of the day [illegible] as agents of violence [illegible] the elitist soft targets in the urban and metropolitan cities.

Unlike the dispassionate narration of Baby Halder the reflections of the teenager protagonist Ram Mohammad Thomas are informed with a political consciousness. "That [illegible] have power only over your own mind. But with money you can have power over the minds of others." (*Q & A* 130) The uncommon choice in the three worded name of the protagonist identifiable with three religions – Hindu, Muslim and Christian respectively is a hypothetical choice. In this novel penned down by an I.F.S bureaucrat, collating the specificities of a Gramscian organic intellectual, the deeply embedded Gramscian and Foucauldian governmentality violates the whole notion of authenticity with the repeated intervention of the authorial agency. The inability of the omniscient narrator to distance himself from the semi literate slum dweller's speech and thoughts is related to the polemics of representation. "The question of representation, self representation, representing others" in Gayatri Spivak's words 'is a problem.' (Spivak 1990: 63) Unlike the 'lived in' firsthand self representation of Baby Halder in *A Life less Ordinary*, the subaltern experience in *Q & A* constructed as a meta narrative of the disadvantaged migrant population in the urban and metropolitan cities abounds with stereotypes and intangible tropes and trajectories — child abuse, sodomy, begging, slums, juvenile homes, orphanage, pubs, prison, prostitution, film stars, diplomats and many more. Despite the writer's familiarity with the distinction between dialect and class language, the protagonist's linguistic excellence is [illegible] in [illegible] domain. By Vikas Swarup's own admission, "I have never lived in Mumbai for any sustained period of time, and I have never visited Dharavi.... One may not have seen Dharavi but one has seen slums." (*Q & A* 370) All slums may be alike but the language is certainly not the same in all the slums.

The migrant experience in Q & A conflating with Gramscian conceptualization of hegemony attempts to capture the complex nature of authority in Indian civil society as the forms of the [illegible] and the private authorities, which is both coercive and dependent on the consent of [illegible]. In the delineation of [illegible] like the protagonist and a horde of his co-fellows coerced into submission. [illegible] the compatibility of the Foucauldian power model is perceptible in the novel. The predominant classes represented by the quiz organisers, the [illegible] as well as manipulative systems of beliefs [illegible] hegemony, but also depend in a quest for power on the [illegible] in civil society [illegible] consent carried by systems and structures of beliefs, values, norms and practices of everyday life which unconsciously legitimate the order of things.

[illegible] of the disempowered waiter in Q & A conflates with the power knowledge paradigm. For both Foucault and Gramsci, power is produced and reproduced [illegible] (Holub 29) Power for Foucault is in the [illegible] of everyday life, and for both power is ubiquitous, with every relation a source of power diffused through the whole network of social relationships [illegible] in the construction of discourse, of hegemony, of domination and subordination [illegible]. Therefore, the groups that promote these hegemonic discourses [illegible] Power is derived through discourse [illegible] these discourses are promoted, and eventually accepted as the [illegible] groups in society [illegible] is derived from knowledge, especially from the human sciences [illegible]. The Truth, in modern societies, [illegible] through power and we cannot exercise power except [illegible]. "We are subjected to the production of truth through power [illegible] through the production of truth. In this way, power is exercised through 'an enforced regime of truth'" (McHoul 59).

Novels like Q & A have created, encouraged and enforced a regime of 'truths' on the subaltern migrants. [illegible] in these novels is not only a great amount of hypothetical truth but also the [illegible] reaction of the elite urban population to the increasing working class power. The [illegible] location of most of these writers and the migrant experience constructed through second hand journalistic sources [illegible] the expertise of these politically well informed writers to translate journalism into a fictional reality but the violation of the notion of authenticity [illegible] the praise of a compassionate reader. The privileging of this urban migrant experience and the subsequent legitimization of these texts by the West in terms of publication, promotion, awards, [illegible] adaptations [illegible] the orient-occident, colonizer-colonized binaries to the first world and third world polarization. This new trope of the subaltern urban migrants is [illegible] with the [illegible] 'exoticization' of the other subaltern constructs, the tribal or rural, for instance, as tools of market economy and consumerism. Representations in an age of consumerism and market economy are employed as ideological tools that tend to reinforce systems of inequality and subordination; they have helped in the past to sustain colonialist or [illegible] projects and are capable of sustaining such discursive projects at present too. A great amount of effort and caution is therefore required to dislodge and challenge these dominant modes and forms of representation.

The widespread violence in the urban and metropolitan sites is an undeniable fact of reality. There is no denying the fact that the large scale migrations in the [illegible] globalized, liberalized and privatized stage have caused a major upheaval in the metropolitan cities bringing into crisis the key institutions of family, marriage, village and city, and lastly the state. In such a climate of

confusion and furore, incidents of violence often attain legitimacy and tend to be dismissed as a [illegible] mode of existence and [illegible] are easily shifted by the powerful to the powerless. It is in this context that the [illegible] of the migrant subject in the literary as well as social culture as an agent of violence needs to be investigated.

Notes:

1. Subaltern/Subalternity: Subaltern is an Italian term which literally means "people of inferior rank". First used by the great Italian revolutionary Antonio Gramsci, it was later adopted by the Indian historian Ranajit Guha and the subalternist group to focus on the 'subaltern' [illegible] in Indian history vis-a-vis the colonial and nationalist historiography. Since then the term is widely used in literature too.

REFERENCES

1. Chakravorty, Dipesh. "Invitation to a Dialogue." Subaltern Studies. Ed. Ranajit Guha. Delhi: OUP, 1985. Print.
2. Guha, Ranajit. Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India. Delhi: OUP, 1983. Print.
3. Halder, Baby. 2002. A Life less Ordinary. Trans. Urvashi Butalia. [illegible]
Z[illegible] 2006. Print.
4. Holz, Hans H. [illegible] Gramsci. Beyond Marxism and Postmodernism. New York: Routledge, 1992. Print.
5. Hoy, David Couzens. Foucault: A Critical Reader. [illegible] Basil Blackwell, 1986. Print.
6. Fanon, Frantz. The Wretched of the Earth. 1961. London: Penguin, 1990. Print.
7. Joll, James. 2006. Antonio Gramsci. New York: [illegible] Print.
8. Khair, Tabish. Babu Fictions: Alienation in Contemporary Indian English Novels. 2001. Oxford: OUP, 2005. Print.
9. McHoul and Grace. A Foucault Primer: Discourse, Power and the Subject. Melbourne:
10. Melbourne University Press, 1993. Print.
11. [illegible] A Laboratory of Their Own: [illegible]
12. Princeton, NJ: Princeton UP, 1977. Print.
13. Spivak, Gayatri. "The Problem of Cultural Self-representation." The Post-Colonial Critic.
14. Interviews, Strategies, Dialogues. Ed. Sarah Harasym. New York: Routledge, 1990. 50-58. Print.
15. Spivak, Gayatri. (2000). "Discussion: An Afterword on the New Subaltern." Community, Gender and Violence: Subaltern Studies XI. Eds. Partha Chatterjee and Pradeep Jeganathan.
16. New Delhi: Permanent Black, 2000. 305-334. Print.
17. Swarup, Vikas. Q & A. London: Black Swan, 2006. Print.

Interview:

Interview with Baby Halder telecast by Doordarshan Delhi on July 25, 2015 in its program [illegible] Woman Powers, 9-10p.m.

Aparajita [illegible]
Vol. [illegible]
ISSN [illegible]

Education : Footprints for Destiny

Dr. Shalini [illegible]*

Education is not a word but an essay consisting of paragraphs on **Etiquette, Development, Upliftment, Critical Analysis, Thoughtfulness and Independent Opinion.** Be it primary, secondary or higher education the ultimate aim is to shape a personality in such a way that a person evolves [illegible] human. All efforts are put together at various levels, right from early childhood to reach above definition. The whole story of human development revolves around these and other related terms and [illegible] human development index can be best enhanced by nothing else but by the spread of education. [illegible] society. To put further in the words of our ex-president and educationist late Shri Radhakrishnan:

"Education to be complete, must be humane, it must include not only the training of the intellect but also the refinement of heart and discipline of the spirit."

Western philosophers have considered education as a prime tool for growth. Various aspects of growth have been identified as social, moral, intellectual by John Dewey[1]. He emphasized on the [illegible] of nature and everyday experiences that give direction to people's life. Parameters of education and its relation with [illegible] have also been addressed by Belok[2]. Several other issues pertaining to a person's skill enhancement together with developing scientific aptitude played a vital role [illegible] deciding policy of education and hence in west, education was more focused on practical learnings compared to eastern societies, making it [illegible] expensive.

Indian education in ancient period (vedic age) and Buddhist period due to lack of [illegible] faced the challenges of [illegible]. Disciples followed a strict lifestyle to achieve ultimate aim i.e. "Moksh". In medieval period emphasis was on learning of state functioning, war practices and fine arts. Spread of science education and professional training can be attributed to British era. Macaulay's [illegible] was approved by Governor General Bentick in the form of new education policy on 7[th] march 1835. After independence, several commissions have been constituted to update our institutions at par with global parameters. In the 21[st] century, sudden rise in self-financing institutions has posed several challenges of value and ethics. These issues are to be taken urgently as demands of [illegible] building can not be met out by state funded institutions alone but a compromise in quality parameters will not serve the purpose of nation's growth. All aspects of human development are to be considered [illegible] definition of education needs to be relooked and understood with holistic approach. Each letter of EDUCATION carries its own meaning thus encompassing growth in true sense.

Etiquette, behavior, manners are all interrelated and are associated with the personality of a person. Childhood lays the foundation of these characteristics, however these attitudes are [illegible] by the surrounding at a later stage. Parents often send their teenage children to boarding institutions. An entirely different exposure contributes substantially in grooming of their personality. In ancient period, rulers and influential people used to send their kids in Ashrams under the guidance of learned Guru/Rishi and thus to gain not only knowledge but also other life skills.

* [illegible] S.S.D.P.C. Girls (P.G.) College, [illegible]

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥
(नीति शतक, भर्तृहरि)

Task of a teacher is not limited to teaching. It involves changes in the entire being of a student. Teacher inspires to know more and more with passion as knowledge has no boundaries. [illegible] and [illegible] approach towards students is essential to develop them into a good human being. Discipline should not be forced but has to be inculcated in a way that students mind understand its importance in life[3].

Teacher should maintain dignity while being impartial to all. His/her place in society was considered to be very special as.....

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

Status of noble profession and traditional values make the expectations high and thus it is really challenging to transform into a mentor from an ordinary professional merely dictating lessons while taking classes in an unenthusiastic manner.

A teacher in vedic period was beyond worldly affairs and hence used to impart knowledge considering pupil as their own seed in their womb.

[illegible] आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं। कृणुते गर्भमन्तः।

(अथर्ववेद 11.5.3)

Tagore also quoted "only a lighted lamp can light a another". It reflects the values & skill [illegible] with teaching profession. An intellectual with strong communication skill can only lead to [illegible] of their pupils mind than an effective transfer of knowledge.

अथर्ववेद में भी कहा गया है कि [illegible]
"[illegible]"

(अथर्ववेद 7.16.1)

Development of a person and his/her **upliftment** in society is linked with livelihood thus a career. Physical, emotional and spiritual aspects are to be worked upon as shaping of one's career cannot be achieved merely on the basis of knowledge of curriculum. Present system of education i.e. schooling as Paulo Friere[5] famously called banking; is making deposits of knowledge. Here learners are considered to be objects and efforts are concentrated on generation of data only. Intense pressure of curriculum often results into psychological pressure and so called advanced learners often lack understanding of environment and relationships.

Man is a social animal and adverse [illegible] family, religion, societal interactions and events contribute more in developing a personality. It is also believed that struggle of life makes a person bold enough to accept the challenges of future. Thus overall formal and informal both play a vital role in education[6].

[illegible] of a person in psychological aspect needs to be paid much attention. Physical [illegible] [illegible] his psychological parameters. It is the psychology of a single [illegible] [illegible] society. [illegible] environmental distraction [illegible] [illegible] physical environment and societal [illegible] [illegible] particular one. Role of a [illegible] [illegible] of a person has been discussed by Lorado [illegible] [illegible] psychologist or counselor for schools.[1]

Critical Analysis is one of the most important virtues that are to be developed [illegible]. [illegible] performing duties and thus **Thoughtful** decision [illegible] more reading further catalyses it and [illegible] **Independent Opinion** grooms a person to face challenges [illegible] his/her wisdom while reacting to any [illegible] queries and to solve problems on the [illegible] knowledge & values and hence should be capable of [illegible] and above all appreciating fine arts, literature etc.

साहित्य-संगीत-कलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥

—नीतिशतक [illegible]

Intellectuals listen to their inner voice before reaching to any opinion. In this process [illegible] [illegible] open and full of hope which is the fabric of education[10]. Education thus [illegible] [illegible] towards enlightenment of soul and leads to our destiny.

REFERENCES

1. [illegible] John Dewey's concept of education as a growth process. Emerson International [illegible] [illegible] series No.7, Anu Prakashan Meerut Pg. 31-33
2. [illegible] Education. Anu Prakashan Meerut
3. [illegible] Anu prakashan meerut Pg. 1-90, 2004
4. [illegible] The Indian Publications, Ambala Cantt. pg. 21-29, 1978.
5. [illegible] Progressive education [illegible] Penguin 1972.
6. [illegible] Contemporary learning theory in the tension field between the [illegible] [illegible] Roskilde university Press 2002.
7. [illegible] Tony Jeffs and Mark Smith (eds) using Informal [illegible] [illegible] University Press 1990.
8. [illegible] Loyal Book Depot pg. 42-47 1974
9. [illegible] Lucknow pg 219- 224, 1968
10. [illegible] Hope and Education. The role of utopian imagination. London Routledge Falmer 2004.

Aggrajita [illegible]

Twelve Olympians

Dr. Anupama Garg*

As [illegible] explain the beginning of the universe in [illegible] of origin and creation myths. Hesiod in his Theogony reported the most widely [illegible] at the time [illegible] with chaos, yawning nothingness. Gaia (The Earth) and [illegible] Eros (The Love), Abyss (The Tartarus) and the [illegible] Gaia gave birth to Uranus (The Sky) who then [illegible] the Titans, 6 males: Coeus, Crius, Cronus, Hyperion, Iapetus and Oceanus and 6 females: Mnemosyne, Phoebe, Rhea, Theia, Themis and Tethys.

After the birth of Cronus, Gaia and Uranus decreed no more Titans were to be born. They were followed by the one-eyed Cyclops and the Hecatoncheires or hundred handed ones, who were both thrown into Tartarus by Uranus. Gaia was furious at this and she [illegible] Cronus to castrate his father. He obeyed his mother and become the ruler of Tartarus with his sister-wife Rhea as his consort and the other Titans became his court. Cronus feared that his offspring would do the same as he had betrayed his father and so each time Rhea gave birth he snatched up the child and ate it. Helpless Rhea tricked Cronus by hiding infant Zeus and wrapping a stone in the baby's blanket which Cronus ate. When Zeus became young he fed Cronus a drugged drink which caused him to vomit, throwing up Rhea's other children and the stone which had been sitting in his stomach all along and challenge his father to war for the kingship of the gods. At last Cronus and the Titans were hurled down to imprisonment in Tartarus. With the help of his brother and sister Poseidon, Hades, Hestia, Hera and Demeter, he overthrew Cronus and the Titans, assumed the sovereignty of the universe and took as his peculiar province the heaven above, giving to Hades the infernal regions, to Poseidon the sea, the Earth being subject to the influence of all three although to Zeus belong the supremacy [1].

In the ancient Greek religion, the Twelve Olympians are the major deities of the Greek Pantheon commonly considered to be Zeus, Hera, Poseidon, Demeter, Athena, Apollo, Artemis, Ares, Aphrodite, Hephaestus, Hermes and Hestia or Dionysus.

Zeus(Roman Counterpart Jupiter): Zeus, in ancient Greek religion is the chief deity of Pantheon, sky and weather god who was identical with the roman god Jupiter. He is regarded as the sender of thunder and lightning, rain and winds and his traditional weapon and symbol were the thunderbolt and eagle, oak tree and scales. He was called the ruler of the mount Olympus and the father of both gods and men. 'Brought up in secrecy in a mountain cavern in Crete, nursed by the goat Amalthea and guarded by the dancing Curetes.'[2], he is the youngest child of Rhea and Cronus and the brother and husband of Hera. In art Zeus was represented as a bearded, dignified and mature man of stalwart build.

*Associate Professor, English S.S.D.P.C. Girls (PG) College, Roorkee

Hera (Roman Counterpart Juno) : In Greek religion a daughter of the Titans Cronus and Rhea, sister-wife of Zeus and the queen of Olympian gods. The ancient identified [illegible] with the Roman Juno. She is the mother of Hephaestus, the god of fire, of Ares, the god of war, of Eileithyia of Hecate and of Hebe. Being the queen of heaven, she is the goddess of marriage, childbirth and of the life of women. As the goddess of lawful marriage [illegible] persecutes the illegitimate offspring of her consort Zeus such as Heracles and [illegible]. Her symbols are cow, cuckoo, peacock and pomegranate.

Poseidon (Roman Counterpart Neptune) : In Greek religion god of seas, earthquakes and tidal waves. The name Poseidon means either 'husband of earth' or 'the lord of the earth'. He was the son of Cronus, an ancient chief god and Rhea, a fertility goddess and was brother of Zeus, the chief god and Hades, god of underworld. [illegible] three brothers usurped their father, the kingdom of the sea fell by lot to Poseidon. [illegible] was the father of the winged horse Pegasus by the winged mother Medusa. In [illegible] art he was represented with the attributes of the trident, [illegible] closely associated with horses, [illegible] as he was represented [illegible] and the tunny fish and his character as the sea-god became the most prominent.

Demeter (Roman Counterpart Ceres) : In Greek religion daughter of [illegible] Cronus and Rhea, sister and consort of Zeus and goddess of agriculture. Her name means either 'grain mother' or 'mother-earth'. She was the mother of Persephone who was carried off while gathering flowers in the Nysian Plains in Asia by Hades, the god of netherworld. Demeter wandered for some time in search of her daughter and when she learned where she had been carried, quitted Olympus in anger and [illegible] earth among men, as at Eleusis, bringing blessings in her train. At length Zeus sent Hermes to bring back Persephone and both mother and daughter were returned to Olympus, whereupon earth again brought forth her fruits. As Persephone had eaten part of Pomegranate in the underworld she was obliged to spend one-third of the year in the gloomy kingdom of her husband returning to her mother the remainder of her year. The attributes of Demeter were grains of grain, basket filled with flowers, fruits of all kinds and pig[8].

Athena (Roman Counterpart Minerva) : The daughter of Zeus and Metis (which [illegible] forms the supreme triad in Greek mythology with Zeus and Apollo. When Zeus became powerful after his victory over Titans, chose for his first wife Metis, but swallowed her when she was pregnant with Athena upon the advice of Uranus and Gaia. When the time came for her birth Zeus felt great pain in his head and caused Hephaestus to [illegible] with an axe and the Goddess sprang forth fully armed. In this way Athena's [illegible] was a divine symbol of the combination of power and wisdom. She is the goddess of wisdom, reason, intelligent activity, literature, handicrafts and science, defense [illegible] strategic warfare. Her symbols are owl, snake and the olive tree. In modern times [illegible] is associated primarily with Athens to which she have her name.

Apollo (both Greek and Roman) : By name Phoebus a deity of manifold [illegible] and meaning, was the representation of Greek life in its most beautiful form and [illegible] ideal of Greek nation. He was the beloved son of Zeus and Leto and the twin brother of Artemis. He is the God of light, justice, prophetic inspiration, medicine, music, [illegible] the founder of cities and the deity of herds and flocks. In art Apollo was represented as a beardless youth either naked or robed and often holding a bow or a lyre.

Artemis (Roman Counterpart Diana) : In Greek mythology, the goddess of wild animals, the hunt and vegetation and of chastity and childbirth, was the daughter of Zeus and Leto and the twin sister of Apollo. Her character and function varied greatly from place to place, but apparently behind all forms lay the Goddess of wild nature, who danced usually accompanied by nymphs in mountains, forests and marshes. Her symbols are moon, deer, hound, the bear, snake, cypress tree and bow and arrow.

Ares (Roman Counterpart Mars) : In Greek religion, God of war also represented brutal warfare, violence and bloodshed and is not never very popular and not [illegible] worshipped in Greece unlike his Roman Counterpart Mars. He was the son of Chief God Zeus and Hera. Ares was one of the Olympian deities; his fellow Gods and even parents, however, were not fond of him and despised him. Aphrodite was Ares legitimate wife and by her fathered Deimos (Horror), Phobos (Panic) and Harmonia. His symbols include the boar, serpent, dog, vulture, spear and shield.

Aphrodite (Latin name Venus) : The Goddess of sexual love and beauty, was born from the white foam produced by the severed genitals of Uranus, after his son threw them into the sea, as the word 'Aphros' means foam. She was the mismatched wife of Hephaestus although she had many adulterous affairs, most notably with Ares. She is not only the goddess of beauty but also has the power of making irresistible beauty and attractiveness to others, especially to wearers of her magic girdle and later she became the ideal of graceful womanhood, fertility and spiritualized by Plato as Aphrodite Urania. Her symbols are the dove, sparrow, swan, bee, myrtle, rose and poppy. Although prostitutes considered Aphrodite their patroness, her public cult was generally solemn and even austere.

Hephaestus (Latin Name Vulcan) : In Greek mythology, he is called the god of fire and forge, master of blacksmiths and the craftsman of the gods. Born lame he is seen walking with the aid of stick and [illegible] his gait and [illegible] figure provoke the laughter of gods. He was cast from Heaven in disgust by his mother, Hera and again by his father, Zeus, after a family quarrel. His ill-matched consort was Aphrodite or Charis. In art he is generally represented as a middle aged bearded man, although occasionally a younger, beardless type is found. Symbols include fire, anvil, axe, donkey, hammer, tongs and quail.

Hermes (Roman Counterpart Mercury) : Greek god son of Zeus and Maia often identified with the Roman Mercury was regarded as the messenger of the gods, god of commerce, thieves, eloquence and streets. His name is probably derived from the word herma, the Greek work for a heap of stones, as such was used in the country to indicate boundaries or a landmark. "In the Odyssey, however he appears mainly as the messenger of the gods and the conductor of the dead of Hades. Hermes was also a dream god and Greeks offered to him the last libation before sleep. As a messenger he has also become the god of roads and doorways and he was the protector of travelers. Treasure casually found was his gift and any stroke of good luck was attributed to him." [8]. Regarded as the herald and messenger in art, he is represented with a herald's staff entwined with two snakes known as Caduceus, with wings of his feet or shoulders and a travelers hats of felt, low in the crown and broad in the brim on his head.

Hestia (Roman Counterpart Vesta) : In Greek religion, goddess of the hearth, the first child of Cronus and Rhea, eldest sister of Hades, Demeter, Poseidon and Zeus and one of the twelve Olympian deities. She was worshipped as the Goddess of the family hearth and the right ordering of domesticity. She was associated with Hermes, the two representing domestic life on the one hand and [illegible] and outdoor life on the other. Later Hestia became the hearth Goddess of the [illegible]

Dionysus (Roman Counterpart Bacchus) : A nature god of fruitfulness and vegetation especially known as a God of wine and ecstasy. He was the son of Zeus and Semele, a daughter of Cadmus, but in origin a Phrygian earth Goddess. Hera out of jealousy persuaded Semele to prove her lover's divinity by requesting him to appear in his real person. But it was impossible because his power was great for the mortal Semele, who was blasted with thunderbolts. However Zeus saved his son by sewing him up in his thigh keeping him there until he reached maturity so that he was twice born and Dionysus was to be brought up by the [illegible] Nysa, a purely imaginary spot. His symbols are grapevine, ivy, cup, tiger, panther, leopard, dolphin and goat. In early art he is represented as a bearded man, but later was portrayed as youthful and effeminate.

REFERENCES

1. Chamber's Encyclopedia Volume [illegible] William and Robert Chamber's Limited 1964 Page no [illegible]
2. Chamber's Encyclopedia Volume 14, International Learning System Corporation Limited, London [illegible] Revised Edition, Page no 802
3. The New Encyclopedia Britannica, Vol 8, 15th Ed., Page No. 635-636
4. Ibid Page No [illegible]
5. The New Encyclopedia Britannica, Vol. 4, 15th Ed. Page no 3
6. The New Encyclopedia Britannica, Vol. 5, 15th Ed. Page 574
7. Photos www.wikipedia.com

Aparajita [illegible]
Vol. 2 [illegible] 2015
ISSN [illegible]

Relevance of Vedic Aachar Darshan

Dr. Bharati Sharma*

Since antiquity, Vedic convention suggests man to achieve that extreme state which is possible only after getting rid of all mortal sufferings. According to Dr. [illegible] Mishra, every man has an [illegible] through which during growth process he attains the state of [illegible]. The actions which help an individual to attain this state are called 'achaar'. In this state we become real humans, emerging into a divine creature i.e. the real excellence in a man.

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।।[1]

The paper focuses upon emergence of excellence when we utilize spiritual guidance during physical action which would contribute to new leaps in practical life as well as to further popularization of spirituality. Pt. Deen Dayal Upadhayay suggested and celebrated '[illegible]' [illegible], the being emerging after passing through the thought process of '[illegible]', '[illegible]' and '[illegible]'. Maharshi Ved Vyas also depicts '[illegible] Vritti' in *Mahabharata* under the three basic gunas: 'sat', 'raj', 'tam' and classified them as following: '*Satvik Gunas*' such as '[illegible]', '[illegible]' and '[illegible]', '*Rajas gunas*' as '[illegible]', '[illegible]' and 'dwesha bhava' whereas '*Tamas gunas*' as '[illegible]', '[illegible]' and '[illegible]':

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।।[2]

Thus by practicing yoga upon all these [illegible] vritti, a man is entitled for being known as '[illegible]' and real 'purush'. Maharshi Patanjali also says :

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः ।।[3]

The man who performs mental bathing at the junction of the White i.e. '[illegible]' or Ganges and the Black i.e. *Pingla*, the Yamuna, becomes free from all sins, and reaches the eternal *Brahma*:

[illegible] ।
[illegible] ।।[4]

Similarly, Maharshi Arvind highlighted the concept of Superman. Dr. Radhakrishnan's Spiritual man and '*Sthitpragya*' in *Geeta* are also [illegible] in this reference. But this deliverance is impossible without '[illegible]'.

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।।[5]

The thought of '*rita*' / ऋत, or truth that is ultimate reality, has greater importance in '*Vaivedic achar darshan*' presenting the parameters of *sadachar*. *Brahmin Granthas* also throw light on *dharma* & *achar*. As *Shatpatha Brahmin* calls truthlessness the hole of [illegible]

*[illegible] Professor, English, [illegible] College, [illegible]

[illegible] ।

Chandogya Upanishad highlights three pillars of Dharma:

[illegible]

'Yagya', 'adhyayana' and 'daan' is the first pillar, 'Tapa' is second and Brahmacharya [illegible] Kula the third pillar. But 'gyan' without value education i.e. moral behavior can only be [illegible] and hence is like [illegible]. As is also well said:

[illegible] ।।

Since the time immemorial, our vedas are conveying that 'satya vidya' to humanity. [illegible] Mundakopnishad Swami Dayanand defines 'Para' and 'Apara' vidya:

[illegible] ।

That vidya which envelops the whole universe encompassing the nature of all '[illegible]' and [illegible] is known as 'apara'. While the vidya that helps to achieve the super [illegible] i.e. 'Brahma' is 'Para'. [illegible] sage Kanad mentioned, one is the means of '[illegible]', while the other of '[illegible]' [illegible] 'Jagadbadini', also known as Science today. Since Vedic age, Bharatiya ideology has been [illegible] and all-pervasive. The Vedic powerful statements reflect this universal aspect which has become common practice in day to day life:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

x x x x x x

[illegible] ।

x x x x x x

[illegible] ।

The term 'Veda' originates after adjoining the suffix [illegible] [illegible] with the [illegible] [illegible] and [illegible] ।।

Mahrshi Dayanand indicated four subjects of 'Veda': 'vigyan', 'karma', 'upasana' and 'gyan'.

[illegible] ।

Thus 'Veda' means 'gyan'. Rishi Dayanand has used the term 'gyan' in the meaning of [illegible] yatharthа gyan.

[illegible] ।

The behavior of holy men is called '[illegible]' in Mahabharata. This term is located as '[illegible]' [illegible]

[illegible] ।

In Chandogyopnishad Sant Angirasa narrated to Devkiputra Sri Krishana the 'yoga darshan' [illegible] which non violent 'yagya' has been celebrated and 'tapa', 'daan' and 'satya' have been said its '[illegible]'

[illegible]

Today we are struggling with the global challenges due to deficient '[illegible]' [illegible] values. This decay is bringing immorality. Thus this is the high time when [illegible] [illegible] discipline or '[illegible]'. When we talk about moral values we actually mean self-discipline, self-[illegible], patience and a genuine mindset. [illegible] originated from the root '[illegible]' [illegible] the genuine path.

[illegible] ।

Thus to act according to the rules or values is moral behavior. [illegible] [illegible] means by which man becomes real human being. By his positive features and holy actions, man can attain [illegible] and prove beneficial for society. That's why Vedic [illegible]:

[illegible]

'Veda' also makes man sensitive with Global integrity and suggests an individual, the microcosm of macrocosm.

[illegible]

At the moment, let us memorise one of the holy Vedic rules of mutual love, affection, peace and [illegible] resulting into happiness:

[illegible] ।

As is said that the physical layer (body) is our action layer. It must be well looked after, as said by Veda:

[illegible] ।।

Almost all formal education today addresses the visible physical layer of human beings, and so do the masses to each other. With less and less awareness of our higher levels of consciousness, no wonder, obvious things like self control and mutually helpful behavior are becoming oblivious in preference to instantaneous profit. With the help of spirituality, we are all capable of reaching higher levels of consciousness to access the divine powers of Universal Energy to empower actions of our physical body.

We were genius at the moment of birth but with the due passage of age we get downfall in our

spirituality. This is our childhood, when we are still fresh from heaven, we have recollection of the divine. This vision of blessed divine world makes the child see on earth the light of heaven. Then nature appears to him

Apparelled in Celestial light.[18]

A intense and personalized experience of oneness that allows us to live in wisdom and knowledge of universal energy is spirituality. Our Spiritual Body actually found its oneness with reality in comparison to physical body. As we go upward, oneness grows. Let us have comparisons in between above and below. While going upward we enjoy automatically centrality, co-operation, which creates [illegible] we [illegible] developed by oneness i.e. spirituality. Resultantly, we learn the art of co-operation and then comes knowledge and wisdom. After the stretch of physical body is completed there starts stretch in energy body. Now awakening of "vedabudhi" occurs and [illegible] formed.

[illegible] (श्रुतिसूक्त)

In the reference of the above personalized experience an episode from Anugita Parva of Mahabharata can be cited between king Janak and a culprit Brahmin who was punished by the king Janak. The Brahmin asked Janak the limits of his administered land and made the king introspect himself his limits. Now the king feels regret saying:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

meaning that either an individual has nowhere his administered land or everywhere his/her kingdom. In a viewpoint, this body is not ours or in another aspect, the whole earth is ours. At that moment, king Janak got emergence of 'vedbudhi' and got rid of temptation from his own Mind. Now even the fragrance he smelled was not meant for his self-satisfaction. This is how king Janak won the whole earth and enraptured it forever. As veda proclaims:

[illegible] ।

[illegible] ।।

On the other hand, below surface is enveloped by uncertainty, competition, strategy, calculation and diversity. When basic nature of water i.e. sweetness is deformed, it needs to be purified. The spiritually originated excellence denotes that wiseman or vidwan purush who gets complete extinguishment of each 'dvand' or dilemma or 'prapanch' or propaganda in his self and realises 'gyan agni' of yogyagya is enlightened in his being:

[illegible] ।

[illegible] ।।

REFERENCES:

[illegible] Dr. Devraj, P.[illegible]

[illegible]

[illegible] Mahabharata, Anugita Parva, Ch.[illegible]

[illegible]

The [illegible] Translated by [illegible] Chandra Vasu [illegible] Distributors, New Delhi, Ed 2013 [illegible]

[illegible] Dr. Radhakrishnan, [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] Ed by Dr. [illegible] 23/2012, P.[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] Vol. [illegible] pp. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] William Wordsworth, Ode on Intimations of Immortality

20. [illegible] Mahabharata, Anugita Parva Ch 32/[illegible]

21. [illegible]

22. [illegible] Mahabharata, Anugita Parva

Aparajita [illegible]
Vol. 2 [illegible]
ISSN 2451 - [illegible]

Continuous and Comprehensive Evaluation & It's Implementation In Indian Education on Different Levels

Dr Peeyush Kumar*

Since the time of our freedom struggle and after independence a lot of committees and commissions continuously emphasized on the free and compulsory education in our newly born independent Country. Among various strategies that have been adopted to expand the provisions for realizing the goal of universalizing Primary and Secondary Education the National Education Policy-1986 had recommended [illegible] and the emphasis has been laid upon implementation [illegible] the quality of School education [illegible] CE [illegible] in an appropriate manner. This paper examines the [illegible] of continuous and comprehensive evaluation [illegible] highlights points about the concept of implementation of continuous and comprehensive evaluation, its need, importance and concepts, its issues and concerns, role of teachers and its implementation in Primary, Secondary schools and Degree Colleges with a practical approach.

The implementation of CCE was initiated on the recommendations to reform evaluation practices in primary, secondary & degree level education by national curriculum for elementary and secondary education - a framework - 1988 (New Education Policy-1986) (NEP). Therefore, it is desirable to examine the viewpoints presented in the framework with respect to evaluation reforms.

The framework emphasizes on the following points -

- Defining Minimum Levels of Learning (MLL) at all stages of education.
- Attaining mastery level in all competencies.
- Broadening the scope of learner's assessment.
- Aiming at qualitative improvement in education.
- Using grades instead of marks.
- As feedback mechanism for the benefit of teachers, learners and parents providing timely corrective measures for improving attainment of different levels of students.
- Using various tools, techniques and modes of evaluation such as paper, pencil test, oral testing, observation schedules, rating scales, interviews and anecdotal records, individual and group evaluation methods at different stages.
- Reducing undue emphasis on paper pencil tests in evaluation process.
- Using informal means of testing to reduce the anxiety and fear of the students.
- Laying stress on informal and child friendly methods of testing.
- Recording of evidences regarding psychomotor skills related to co-scholastic areas such as work experience, art education and physical education.
- Preparing a profile of the growth and development of every learner.

*[illegible] Dr. Rajendra Singh Memorial [illegible], [illegible]

- Every school/college may do planning of a detailed scheme of evaluation in view of the minimum learning outcomes.
- Evaluation of the [illegible] qualities like regularity and punctuality, cleanliness, self control, sense of duty, desire to serve, responsibility, fraternity, democratic attitude and sense about environmental protection.
- Continuity of evaluation through periodical assessment of learning.
- A clear explanation of evaluation process for making it transparent by taking parents and community into confidence.
- Developing competence for self-evaluation keeping in view the maturity level of children.

CONCEPT :

Concept of CCE is a process of determining the extent to which the objectives are achieved. It is not only concerned with the appraisal of achievement, but also with its improvement. As testing evaluation is also concerned with identification of learning experiences and educative environment to produce changes in the learner's behaviour. It involves information gathering, information processing, judgement forming, and decision making. In recent years, there has been a growing concern for improving the quality of achievement of all students in elementary and higher level. In this context the NEP - 1986 recommended that MLL be laid down at each stage of primary, secondary school and degree college education, and that steps be undertaken to ensure that all students achieve these MLL. As a follow-up, the MLL for each subject from class I to V were stated in terms of competencies. Each competence constitutes an expected performance target that lends itself to criterion testing which is criterion and competency based. It becomes essential for the teachers to adopt a scheme of continuous evaluation that helps in confirming whether or not the learners have mastered the competencies or not. A competency also becomes a criterion to organise teaching-learning process, and at the same time to assess the students. It is a very well known fact that usually evaluation is done to measure the knowledge and understanding outcomes. The evaluation of skills and higher mental abilities are neglected to a great extent. The evaluation of non- cognitive aspects like attitudes, appreciation, interests, personal and social qualities of students are seldom carried out. The report of MLL and the national curriculum frame work of school education have specified certain personal and social qualities that need to be developed in children. They stress the point that the evaluation should be comprehensive in nature, where in all learning experiences pertaining to scholastic, co-scholastic and personal and social qualities are assessed. The comprehensive evaluation should involve the summative assessment of cognitive abilities, as well as the assessment of health habits, work habits, cleanliness, cooperation, and other social and personal qualities through simple and manageable means of tools. The comprehensive evaluation not only helps in checking all the standards of performance in both scholastic and co-scholastic areas, but also in decision making regarding various aspects of teaching-learning process, promoting the students, increasing quality, efficiency, and accountability. CCE necessitates the use of multiple evaluation techniques and tools in addition to certain conventional ones. The teacher has to select the most appropriate technique for a situation and develop the necessary tools for the same, and decide upon the periodicity and timing of evaluation.

Some practical studies conducted at Regional level in Schools & Colleges & other studies reported & reveal the following:-

- Evaluation practices carried out in schools & colleges are still conventional in their nature & purposes.
- Continuous assessment is not followed systematically in those schools & colleges where teachers are trained in in-service & UGC program.
- Competencies are not assessed through planned procedures of evaluation.
- Assessment of wrong things; formative feedback is not provided; learning difficulties are not identified.
- The personal & social qualities are totally ignored due to lack of awareness of what to be evaluated & how to evaluate?
- Remedial instruction is not provided.

Some of the tensions and constraints influencing teachers' evaluation practices are :-

- Lack of knowledge and skills related to evaluation.
- Lack of facilities and time.
- Expectations of the Head teachers and the colleagues to complete the syllabus in time;
- The social requirement of information, external accountability.

Further, in-service programmes in school & degree levels planned for the teachers have inadequate inputs in evaluation & do not create avenues for practical exercises during the training sessions.

IMPLEMENTATION:-

The role of CCE becomes very important when our aim is to improve learner's quality in the cognitive as well as in the non-cognitive domains. It would be reasonable to regard continuous assessment in the context of school/colleges as a continuous updating of teachers' judgments about learners that permit cumulative judgments about their performance to be made.

Some important points to be considered for implementing CCE are:

- Careful examination of the course, and specification of competencies to be attained by the students in terms of knowledge, understanding, application (analysis, synthesis, evaluation for higher grades) & skill performance.
- Knowledge & ability to construct assessment tools that are criterion based appropriate for assessing the competencies.
- Careful planning of the competency based teaching procedures, Comprehensive evaluation of competencies & personality traits and attitudes.
- The maintenance of records.
- Requirement of knowledge & skills of evaluation, commitment & assistance to provide remedial teaching on the part of the teacher.

Tools and Techniques of Evaluation :-

A. Evaluation of Scholastic Areas —

Area	Technique	Tool	Period	Reporting
a) The Scholastic Areas	Oral test Written Test, Project Work, Practical Activities, Maintenance of Portfolio	Oral Questions Class Work, Question Paper, Unit Test, Assignments, Diagnostic Test	Every day after completing a competency or Group of competencies Monthly Class Test, Unit Test, Terminal Test	Using Direct or Indirect Grades

B. Evaluation of Co-scholastic Areas and Personal & Social Qualities —

Area	Technique	Tool	Period	Reporting
[illegible]	Study of Development of Physical Growth	[illegible]	Once in a Year	[illegible]
[illegible]	Observation of Activities	Rating Scale	[illegible]	[illegible]
[illegible]	Observation of Work & Activities Maintenance of Portfolio	Rating Scale	[illegible]	[illegible]
[illegible] Personal & Social Qualities [illegible]	Observation, Interview and Self Reporting Techniques (Students' Diary)	Rating Scale, Checklist & Anecdotal Records	[illegible]	[illegible]

The Continuous and Comprehensive Evaluation helps a Teacher in the following ways:—

- To identify learning difficulties in mastering the competencies & the intensity of learning difficulties.
- To improve students' learning through diagnosis of their performance.
- To plan appropriate remedial measures to enable the students who have learning difficulties in mastering the competency.
- To improve Instructional Strategies to develop the quality of teaching.
- To decide upon the selecting of various media & materials as a supportive system in mastering the competencies.
- To strengthen evaluation procedure itself.

In view of the existing evaluation practices in schools/colleges, it was considered necessary to develop a scheme of evaluation in order to improve the evaluation system. A school/college based evaluation scheme was conceived in implementing the idea of CCE in schools/colleges by the unit of Department of Educational Evaluation and Measurement, NCERT in Demonstration Multipurpose School (MS) of all Regional Institutes of Education (RIE) (B.Sc.B.Ed, M.Sc.M.Ed, Integrated Courses in 2011. The project aimed at developing student's achievement through continuous assessment,

[illegible] and [illegible] in [illegible] scholastic areas and personal and social qualities. [illegible] and supervision was another important component of the scheme that aimed at effective implementation of the scheme as well as for providing timely interventions for its smooth functioning. The head teachers and the other teachers were expected to assume more responsibility and power to take initiatives to improve evaluation system. The scheme also aimed at the involvement of parents in improvement of students's progress in both scholastic and co-scholastic areas. The scheme had a positive impact on learners, especially in improvement in personal and social qualities. The teachers were found to have improved their evaluation competencies. The teachers of DMS of all RIE are continuing the evaluation scheme even though the project is completed, which is an indicator of successful impact of the evaluation scheme on parents, teachers and students.

CONCLUSION

Last but not the least, if we wish to discover the truth about an educational system, we must look into its Evaluation Procedures. Examinations in their present form are not the real measure of students' potential because they cover only a small fraction of the course content. They neither cover all the evaluation of all abilities. Nor, do they provide for the application of multiple Evaluation Techniques which can assess the cognitive as well as the non-cognitive abilities of Learners. The CCE facilitates student's effective Learning as well as their all round development of personality with its multiple Evaluation Tools and Techniques and corrective measures. It is almost important to make implementation of CCE as an integral part of Teaching and Learning process to promote standards of Primary, Secondary schools and College Level Higher Educational Institutions.

REFERENCES

1. Rao Manjula P., [illegible] of the Continuous and Comprehensive Evaluation [illegible] Programme on the Evaluation Practices of Primary School Teachers – A DPEP Research Study in Tamil Nadu, RIE, Mysore, 2001.
2. Rao Manjula P. and Rodrigues S.F., Development and Implementation of a School Based Evaluation System at Primary Stage in Demonstration School, RIE, Mysore, 2002.
3. Government of India: National Policy on Education, MHRD, Department of Education, New Delhi, 1986.
4. NCERT, National Curriculum for Elementary and Secondary Education – A Framework (Revised Version), Published at the Publication Department, Secretary, NCERT, New Delhi, 1988.
5. NCERT, National Curriculum for School Education, Publication Department, Secretary, NCERT, New Delhi, 2000.
6. Rao Manjula P., Impact of SOPT Training Programme on the Classroom Practices of Teachers – A Study in Southern States, RIE (NCERT), Mysore, 1999.
7. [illegible], [illegible] in Schools, Published at the Publication Division by the Secretary, NCERT, New Delhi, 200[illegible].

Apratim [illegible]
Vol. [illegible] Jan-Jun. 2018
ISSN 2394 - [illegible]

Effects of Culture on Food Choices

Dr. Vinita Tomer*

Food and culture are two different words that go very well together. Food is essentially considered to consist of nutrients that support body growth and metabolism to provide energy. But apart from all the nutritional value, the food we eat also represents our culture, and is a very important component of it. The types of food consumed by millions of people around the world vary according to region and different cultures. This diversity did not start in the same way but it changed gradually with the passage of time to match our society and our available resources. So to understand certain culture one has to learn how does culture affect food choices.

Culture, food preparation and consumption are considered a vital part of a cultural act. It has been gradually adopted as per climatic conditions and availability of prey. So to study the way as how does culture affect food choices it is important to understand the different aspects of food making, which evenly varies among different cultures. Most major cities in the world are made up of diverse societies consisting of a wide range of individuals from different ethnic and cultural backgrounds. Ethnicity refers to a social group, which shares certain distinctive features, such as language, culture, physical appearance, religion, values and customs. Culture on the other hand refers to how we do and [illegible] group, for example a shared set of values, assumptions, perceptions and conventions [illegible] a shared history and language can make a certain group. In order for society to function efficiently and smoothly these individuals must learn to integrate and co-exist together. This will [illegible] other things, accepting and sampling different types of foods and even adjusting their diets. As a result the choices and selections of food that people make, in the classes of foods they eat, will vary widely.

Objectives

- To describe the positive and negative impact on health due to different cultures related to diet.
- To introduce Indian and Western food culture.
- To study the how does culture affect our food choices.
- To study the influence of culture on kid's nutrition.

Negative and Positive Impact - Different cultures can produce people with varying health risks, though the role of diet is not always clear. For example, African-Americans and many Southerners are at greater risk for ailments such as heart disease and diabetes, but Southern-style fried foods, biscuits and ham hocks might not be the only culprits. Income levels, limited access to healthier foods and exercise habits might play's role as well. Menus stressing lower-fat foods and lots of vegetables, such as those of many Asian cultures, can result in more healthful diets, even reducing the risks for diseases such as diabetes and cancers.

As people from one culture become assimilated into another, their diets might change, and not always for the better. A good example is the shift away from traditional eating patterns among

*[illegible]

her [illegible] culture influences the ways that she eats and even joked that no one in her [illegible] family is skinny. "It is that, in some parts of Africa, when they say a man would only want a woman with some meat on her bones," she said. Olson said that in some cultures, meat is [illegible] luxury and if you are a "woman with meat on her bones," then you come from a wealthy family.

Jules Harrell, Ph.D., a professor of psychology at Howard University, said that "culture [illegible] affect certain behaviors - what we eat, the amounts we eat and how we share."

In the United States, Harrell explained, Americans have "their own individual plate of food," whereas in other countries, people would eat out of a shared bowl. Culture also tells parents if food is [illegible] parental, they will give it to the children first. But when it comes to overeating, Harrell explained that some people may have sensory cues while others may have metabolic cues. Metabolic cues [illegible] the human body to stop eating, while sensory cues make people have the urge to want more based on how good the food tastes.

[illegible] that encourage them to nursing until they have reached a [illegible] satisfaction, Harrell said. Cultural adaptations also turn into cultural trait-adaptations where people eat certain things because other things were scarce. During slavery, the Africans were stripped from their normal diets. They were brought to America and adjusted to different types of meals. Throughout slavery, blacks grew accustomed to eating scraps of pork, such as bacon and other foods high in fat and sodium that could be considered detrimental to African-American health. People often think that it was good enough for the slaves to eat, it's good for us now, but that is not true," Harrell said. "The slaves were a lot more active."

Throughout the years, blacks have come to call certain types of food soul food, showing a sense of communication of love and joy through food, Harrell said.

Influence of Culture on Nutrition With Kids - Traditional foods can be healthy if they are low in fat and sugar. In a paper called "Influence of Race, Ethnicity, and Culture on Childhood Obesity: Implications for Prevention and Treatment," which was published in a 2008 issue of "Diabetes Care," the authors defined culture as an accumulation of shared beliefs and learned behaviors that distinguishes the members of one group of people from another. The American Academy of Pediatrics states that culture influences food preparation, use of ingredients and the consumption frequency of specific foods. Furthermore, nutrition behaviors are influenced by a multitude of cultural forces says the AAP.

Acculturation - According to AAP, acculturation, where members of a cultural group adopt the beliefs and behaviors of another culture, may have a significant influence on children's nutrition by changing customary eating behaviors to resemble those of the dominant culture. Caprio et al., authors of the previously mentioned "Diabetes Care" report, found that first-generation Latino adolescents ate more fruits and vegetables and consumed less soda than white American teenagers, but with subsequent generations, the consumption of fruits and vegetables decreased while soda consumption increased. By the third generation, their nutrition was poorer than that of white youth.

Feeding Practices - Culture affects the eating habits of kids, says Caprio et al. Most children and teenagers share food preferences similar to those of their parents, because the latter have for the most part been making food choices for their children since they were born. These dietary choices, however, may be influenced by the availability or affordability of traditional foods and ingredients, the

[illegible] parents to abandon certain foods and adopt mainstream food instead if necessary. AAP [illegible] that kids in particular may choose not to eat traditional foods because that would make them [illegible] different from other kids.

Food Consumption - The shared values of a cultural group influence the type of food consumed by that group, according to Caprio et al. and these beliefs define the nutritional value of food. The authors provide an example of the Hmong immigrants in California who believe that only fresh food, [illegible] processed or frozen, is healthy. The AAP reports that sensory properties of food, such as consistency, appearance or taste, rather than a specific health benefit, may also affect the type of food consumed within an ethnic group.

Nutrition Marketing - Targeted marketing of high-calorie foods and beverages may account for cultural differences in regard to nutrition, reports Caprio et al. According to the authors, "exposure to food-related television advertising was found to be [illegible] greater among African American children, with fast food as the most frequent category." Such influences steer children away from healthier traditional foods in favor of foods with low nutritional value.

Conclusion - So in order to jot down all the facts related to culture and food and understand the [illegible] of how does culture affect food choices, it can be said that the transformation of recipes into real food that eventually acquires its own language and comes out "as a product of complex culture that is affected by external factors such as geography, climate, the pursuit of pleasure and the wish to acquire good health. It can be easily concluded that food has always symbolized class and cultures. "But dietary influences go beyond the realm of the senses. Cultural differences are important to note. Some cultures and even religions emphasize a vegetarian or even vegan diet. A vegan diet refers to a diet that excludes meat and animal products, such as milk and eggs. Such cultural, religious, or purely personal dietary choices are fine so long as they are made with care and consideration. For instance, vegetarians need to seek out protein sources other than meat in order to stay healthy. This can include eggs, milk, tofu, beans, and so forth. On the basis of ongoing discussion it can easily be concluded that choice & selection of food on any society is affected by its cultural practices in a bigway.

REFERENCES

- www.food-links.com/how-does-culture-affect-food-choices/
- healthyeating.sfgate.com/influence-culture-nutrition-kids-4305.html
- www.[illegible]newsservice.com/news/view.php/[illegible]/culture-influence-how-and-what-people-[illegible]
- [illegible]/2[illegible]1279
- www.livestrong.com/article/276301-how-culture-affects-diet/
- Study.com/academy/lesson/factors-that-influence-dietary-choices-gender-culture-other-[illegible].html

Guidelines for Submitting Papers

1. All manuscripts should be prepared clearly typewritten in **Microsoft Word, in Kruti Dev 010 font size 16 for English/Hindi** and **Times New Roman, font size 12 for English (latest Edition MLA Handbook** *in all matters of form)* typed in double space and one-inch margins on single-sided A4 paper.
2. Each manuscript requires an Abstract in 100-150 words.
3. Title of the paper should be bold, title case (capitaliz [illegible]), centered and text of the research paper should be justified. All pages of the manuscript will should be numbered at the upper right corner of the page.
4. The main paper must contain the Name, Affiliation, Contact No. and E-mail address of the author (s). The above information should be placed in the right corner under the Title of the paper.
5. Length of the research paper must be in (not more) 2500-3000 words.
6. The articles/research paper without references or incomplete references will not be entertained. Paper written in English or Hindi Language must be followed by endnote.
7. The article/research paper should be accompanied with a declaration to the effect that the paper is the original works of the author (s) and that has not been submitted for publication anywhere else.
8. The editorial Board reserves the right to condense or make necessary changes in the research articles.
9. Authors are requested to follow the strict ethics of writing scholarly papers and to avoid plagiarism.
10. Research paper must not be against the Nation, Religion, Caste & Creed and individual also. Do not draw religious symbols on any page of your research paper.
11. Research paper should be prepared according to our style-sheet and it must be submitted to the Editor through E-mail: ssd.journal@gmail.com alongwith one hard copy.

Style sheet of paper

i- Title
ii- Author's name Designation, contact No. email Id (under the title right hand side of the page)
iii- Abstract
iv- Keywords
v- Body of paper, with or without headings and subheadings
vi- Conclusion
vii- Citations/ end notes

- **Research Papers for Jan.-Dec. 2017 issue should be submitted latest by April 2017.**